@haryanavatika www.haryanavatika.in @haryanavatika @haryanavatika

हरियाणा वाटिका

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

लोहारू से प्रकाशित सोच बिल्कुल निष्पक्ष

RNI No-HARHIN/2019/79021 वर्ष : 06, अंक: 216 पृष्ठ: 08, मूल्य: रू. 1.00 मंगलवार, 10 जून 2025 haryanavatika@gmail.com +91-9255149495

प्रेरणास्त्रोतः स्व. डॉ. एलसी वालिया

कांग्रेस झूठा नैरेटिव फैलाने की कोशिश कर रही: शिंदे

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा, 'लोकसभा चुनावों में जब महाविकास आघाड़ी ने महाराष्ट्र में अच्छा परफोर्म किया, तब राहुल ने कुछ नहीं कहा। उस समय एग्ट और चुनाव आयोग सही थे। अब वे एक झूठा नैरेटिव फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।' महाराष्ट्र में 23 नवंबर 2024 को बनी थी महायुति सरकार पिछले साल 23 नवंबर को महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजे आए थे। महायुति को 230 सीटों पर जीत मिली थी। भाजपा ने 132, शिवसेना (एकनाथ शिंदे) ने 57 और एनसीपी (अजित पवार) ने 41 सीटें जीतीं। वहीं, कांग्रेस के नेतृत्व वाला महा विकास अघाड़ी 46 सीटों पर सिमट गया। शिवसेना (उद्धव) 20, कांग्रेस 16 और एनसीपी (शरद पवार) के हिस्से 10 सीटें आईं। 2 सीटें सपा ने जीती हैं। 10 सीटें अन्य के खाते में गईं। महाराष्ट्र विधानसभा की 288 सीटों पर 20 नवंबर को वोटिंग हुई थी। 2019 के मुकाबले 2024 में 4% ज्यादा वोटिंग हुई थी। 2019 में 61.4% वोट पड़े थे। 2024 में 65.11% वोटिंग हुई। महाराष्ट्र चुनाव के बाद राहुल लगातार भाजपा और चुनाव आयोग पर आरोप लगाते आ रहे हैं। चुनाव आयोग राहुल के आरोपों पर कई बार जवाब दे चुका है। अप्रैल में चुनाव आयोग ने कहा था- कानून के अनुसार वोटर लिस्ट चुनाव से ठीक पहले या साल में एक बार संशोधित होती है। वोटर लिस्ट की फाइनल कॉपी कांग्रेस समेत सभी पार्टियों को दी जाती है।

चुनाव आयोग हरियाणा-महाराष्ट्र चुनाव डेटा कब शेयर करेगा: राहुल

राहुल ने पूछा, तारीख बताएं; दो दिन पहले कहा था- 2024 विधानसभा चुनाव में मैच फिक्सिंग हुई

नई दिल्ली/हरियाणा वाटिका एजेंसी

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सोमवार को हरियाणा और महाराष्ट्र में 2009 से 2024 के दौरान हुए चुनावों का डेटा शेयर करने के चुनाव आयोग के फैसले की सराहना की। राहुल ने पूछा कि क्या चुनाव आयोग डिजिटल फॉर्मेट में डेटा सौंपने की तारीख बता सकता है। राहुल ने यह सवाल पर एक पोस्ट के जरिए पूछा। उन्होंने 7 जून को पब्लिश एक मीडिया रिपोर्ट का स्क्रीनशॉट भी शेयर किया, जिसमें दावा किया गया है कि चुनाव आयोग ने 2025 की शुरूआत में दिल्ली हाईकोर्ट को 2009 से 2024 तक हरियाणा और महाराष्ट्र के वोटर्स लिस्ट का डेटा शेयर करने का आश्वासन दिया था।

हालांकि, चुनाव आयोग की ओर से इस पर अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। राहुल ने शनिवार को देश के दो दैनिक अखबारों में अपने लेख के जरिए 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में धांधली का आरोप लगाते हुए चुनाव आयोग से जवाब मांगा था। आयोग के सूत्रों ने रविवार को कहा कि वह तभी जवाब देगा जब राहुल उन्हें डायरेक्ट लेटर लिखेंगे।

'चुनाव आयुक्त नियुक्ति कानून के जरिए

चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति करने वाली कमेटी में सीजेआई की जगह एक केंद्रीय मंत्री को बैठाया गया। इससे निष्पक्षता खत्म हो गई और पूरा कंट्रोल सरकार के हाथ में चला गया। मुख्य न्यायाधीश को हटाकर कैबिनेट मंत्री को लाना ठीक नहीं लगता। सोचिए, कोई किसी निष्पक्ष व्यक्ति को हटाकर अपने आदमी को क्यों लाना चाहेगा? इसका जवाब अपने आप मिल जाता है।'

राहुल अपने आप को झूठा आश्वासन दे रहे: फडणवीस

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव को लेकर राहुल गांधी के आरोपों का खारिज कर दिया। उन्होंने कहा, 'राहुल गांधी ने बिहार में अपनी हार मान ली है। जब तक वह जमीन पर नहीं उतरेंगे, तथ्यों को जब तक नहीं समझेंगे, तब तक उनकी पार्टी नहीं जीत सकती। उन्होंने अपनी बातों से महाराष्ट्र के वोटर्स का अपमान किया है।'

महाराष्ट्र की तरह बिहार में मैच फिक्सिंग होगी: राहुल

राहुल गांधी ने अखबारों में अपने लेख में कहा था कि- महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में 'मैच फिक्सिंग' की गई थी, जिसमें पहले से भाजपा की जीत तय करने की पूरी कोशिश की गई। भाजपा और उसके सहयोगियों ने चुनाव जीतने के लिए 5 स्टेप की प्लानिंग की थी। राहुल ने ये भी कहा कि महाराष्ट्र की तरह ही मैच फिक्सिंग अगली बार बिहार में होगी, फिर किसी भी राज्य में जहां भाजपा हारती दिख रही हो।' हालांकि, चुनाव आयोग ने राहुल के दावों को निराधार करार दिया और कहा कि चुनाव के फैसले पक्ष में नहीं आने के बाद ऐसे आरोप लगाना बेतुके हैं। इसके बाद राहुल ने चुनाव आयोग के जवाब देने के तरीके पर भी सवाल उठाए।

चुनाव में मैच फिक्सिंग लोकतंत्र के लिए जहर: कांगेस सांसद राहुल गांधी

'यह समझना मुश्किल नहीं है कि महाराष्ट्र में भाजपा इतनी बौखलाहट में क्यों थी, लेकिन हेराफेरी करना मैच फिक्सिंग जैसा है। जो टीम धोखा देती है वो भले ही जीत जाए, लेकिन इससे संस्थाएं कमजोर होती हैं। जनता का चुनाव पर भरोसा खत्म हो जाता है। हर जिम्मेदार भारतीय को इन सबूतों को देखना चाहिए और सवाल पूछने चाहिए। चुनाव में मैच फिक्सिंग किसी भी लोकतंत्र के लिए जहर है। 'मैं किसी छोटे-मोटे चुनावी गड़बड़ी की बात नहीं कर रहा, बल्कि ऐसे धांधलेबाजी की बात कर रहा हूं जो बड़े स्तर पर की गई और जिसमें देश की अहम संस्थाओं को कब्जे में लेने की कोशिश की गई।'

बाबा बंदा सिंह ने धर्म और राष्ट्र की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर किए : बड़ौली

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

ऑप्रेशन सिंदूर की सफलता के उपलक्ष्य में सोमवार को सोनीपत में वीर सैनिकों के सम्मान में ह्मभहान योद्धा बाबा बंदा सिंह बहादुर का बलिदान दिवसह्न मनाया गया। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने बाबा बंदा सिंह को पुष्पांजलि अर्पित उनके अद्वितीय बलिदान को नमन किया। उन्होंने कहा कि बाबा बंदा सिंह बहादुर ने धर्म और राष्ट्र की रक्षा में अपने प्राणों का बलिदान दिया। बाबा बंदा सिंह बहादुर का अद्वितीय बलिदान हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। श्री बड़ौली ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि यमुनानगर की पवित्र धरती पर सिख योद्धा बाबा बंदा सिंह बहादुर जी की स्मृति में भव्य स्मारक और संग्रहालय का निर्माण भाजपा सरकार द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह स्मारक आने वाली पीढ़ियों को उनके साहस, न्याय और बलिदान की गौरवगाथा से प्रेरित करेगा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की सेवा के लिए महान योद्धा बंदा सिंह बहादुर का बलिदान विलक्षण है। उन्होंने कहा कि वीर बंदा सिंह ने मुगलों व अधर्म के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनकी इस वीरता को कभी भुलाया नहीं जा सकता। बाबा बंदा सिंह का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा में महापुरूषों, योद्धाओं और संतों को उचित सम्मान दिया जा रहा है।

मुख्य सचिव ने की राज्य कार्य योजना की समीक्षा

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा सरकार ने प्रदेश में व्यापक वृक्षारोपण अभियान चलाने और मजबूत सार्वजनिक भागीदारी से पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ाने के मकसद से एक पेड़ माँ के नाम 2.0 के नाम से एक महत्वाकांक्षी पहल की है। मुख्य सचिव श्री अनुराग रस्तोगी की अध्यक्षता में आज यहां एक उच्च स्तरीय बैठक में राज्य कार्य योजना की समीक्षा की गई। बैठक में इस अभियान को प्रमुख राष्ट्रीय मिशनों के साथ जोड़ने और जिला स्तर पर प्रभावी समन्वय सुनिश्चित करने की रणनीति बनाई गई। संपूर्ण सरकार और संपूर्ण समाज के दृष्टिकोण से लागू किया जाएगा।

बीजेपी की घटिया पोर्टल सेवा से विद्यार्थी, अभ्यार्थी समेत हर वर्ग परेशान: हुड्डा

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा है कि प्रदेश में बीजेपी की नहीं, बल्कि पोर्टल की सरकार चल रही है। ऐसा पोर्टल जिसका सर्वर हमेशा डाउन रहता है और जो जरूरत पड़ने पर कभी काम नहीं करता। इसके चलते विद्यार्थी, अभ्यार्थी और लाभार्थी समेत हर वर्ग परेशान है। हुड्डा ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने ऑनलाइन सुविधाओं की शुरूआत की थी। इसका मकसद तमाम सरकारी विभागों व सेवाओं से लेकर पंचायतों तक को ऑनलाइन करके जनता को घर बैठे एक क्लिक पर सुविधाएं उपलब्ध करवाना था। लेकिन बीजेपी ने इन ऑनलाइन सेवाओं का पूरा सिस्टम ही उल्टा कर डाला। ऑनलाइन काम करवाने के लिए भी लोगों को सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ रहे हैं। भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि एक तरफ जहां सीईटी के आवेदन और कॉलेज-विश्वविद्यालयों में दाखिलों का दौर चल रहा है। कई तरह के अन्य परीक्षाएं भी आयोजित होने वाली हैं। इसके लिए विद्यार्थियों व अभ्यार्थियों को तमाम दस्तावेज तैयार करवाने हैं। लेकिन ठीक उसी समय सरल पोर्टल ठप हो गया। इसकी 300 सेवाएं पूरी तरह बंद हो गईं। हैरानी की बात है कि जाति प्रमाण पत्र बनवाने के लिए लोगों से जिंदा मां-बाप के मृत्यु प्रमाण पत्र मांगे जा रहे हैं। लाखों युवा रोज सीईटी का आवेदन करने के लिए माथापच्ची कर रहे हैं, लेकिन कोई समाधान ही नहीं निकल रहा। करीब एक हफ्ते से मैरिज, आय, जन्म, मृत्यु, जाति व डोमिसाइल सर्टिफिकेट से लेकर आवास योजनाओं तक के आवेदन की सेवाएं पूरी तरह बंद पड़ी हुई है। रोज लाखों लोग सीएससी केंद्रों के चक्कर काट रहे हैं। लेकिन सभी बेउम्मीद होकर वापिस लौटते हैं। हुड्डा ने कहा कि यह कोई पहला मौका नहीं है, जब घटिया प्रोग्रामिंग और सर्वर एरर वाले पोर्टल के चलते जनता को इस तरह दिक्कतों का सामना करना पड़ा हो। इससे पहले परिवार पहचान पत्र से लेकर तमाम ऑनलाइन सेवाओं में ऐसी गड़बड़ियां लगातार सामने आती रही हैं। गड़बड़ियों का आलम इस हद तक है कि 90% से ज्यादा परिवार पहचान पत्रों में धांधली पाई गई। कई-कई महीने लोगों को सरकारी विभागों के चक्कर काटने पड़े लेकिन आज तक भी इन गड़बड़ियों को दूर नहीं किया जा सका।

राज्यपाल ने भगवान बिरसा मुंडा को उनके शहीदी दिवस पर दी श्रद्धांजलि

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने सोमवार को भारतीय इतिहास के दो महान नायकों, बाबा बंदा सिंह बहादुर और भगवान बिरसा मुंडा को उनके शहीदी दिवस पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने उत्पीड़न के खिलाफ उनके साहसी संघर्ष और सामाजिक न्याय के लिए उनके अमर बलिदान को याद किया। राज्यपाल ने कहा कि आज हम बाबा बंदा सिंह बहादुर के अद्वितीय साहस और बलिदान का सम्मान करते हैं, जिन्होंने पंजाब में न्याय और स्वशासन की नींव रखी और मुगलों के अत्याचार के खिलाफ डटे रहे। धर्म के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और उनका सर्वोच्च बलिदान पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। श्री दत्तात्रेय ने भगवान बिरसा मुंडा के योगदान को भी स्मरण किया, जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आदिवासी समुदायों का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा कि बिरसा मुंडा का निर्भीक संघर्ष और समतापूर्ण समाज का उनका स्वप्न भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आदिवासी गौरव का प्रतीक है। उनकी विरासत हमें सामाजिक सशक्तिकरण और एकता का पाठ पढ़ाती है।

राज्यपाल ने देश के युवाओं से इन महानायकों के जीवन से प्रेरणा लेकर एक सशक्त, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया।

राहुल जब भी हारते हैं तो कभी ईवीएम तो कभी आयोग को लेकर रोते है : विज

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री श्री अनिल विज ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा महाराष्ट्र चुनाव में धांधली के आरोप लगाने पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि ये राहुल गांधी का राजनीतिक रोना है, रोने के बहुत तरीके होते हैं वो जब भी ये हारते हैं तो कभी ईवीएम को बोलते हैं, तो कभी चुनाव आयोग को लेकर रोते है। मगर यह हिमाचल जीते तो कुछ नहीं बोलते, कर्नाटक जीते तो यह नाचे-गाए लेकिन कुछ नहीं बोले। इसके अलावा एक ऊर्जा मंत्री श्री विज ने कहा कि बिजली के प्रीपेड मीटर सबसे पहले सभी सरकारी कार्यालयों और इंस्टिट्यूट में लगाए

जाएंगे। कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने सवाल उठाते हुए कहा कि चुनाव आयोग और ईवीएम तो एक ही है। कांग्रेस पार्टी इस देश से समाप्त व खत्म हो रही है, उसे देखने के बजाए यह दोषारोपण करने में लगे है। अब कांग्रेस की बिहार के चुनाव में हार होने जा रही है और ये अभी से उसकी भूमिका तैयार कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी किसी भी संवैधानिक प्रजातंत्र पर विश्वास नहीं करती। इन्होंने पहले भी तानाशाही से शासन किया क्योंकि कांग्रेस तानाशाही है और तभी यह देश की प्रजातंत्र पर विश्वास नहीं करते। कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने पवन खेड़ा को सलाह देते हुए कहा कि वह कुछ दिन किसी आरएसएस की शाखा में जाकर उसे अटेंड कर ले और उसे जान ले क्योंकि जिस चीज के बारे में आप जानते ही नहीं उसके बारे में बोल कैसे सकते हैं। वहीं, पूर्व सीएम भूपिंदर हुड्डा ने कहा कि सरकार के पास आयुष्मान कार्ड के लिए पैसे खत्म हो गए है जिस पर जवाब देते हुए कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि पैसे तो दिए जा रहे है, हर महीने प्रक्रिया पूरी होने के बाद बिल दिए जाते ह

। हरियाणा में बिजली के प्रीपेड मीटर लगने जा रहे है जिस पर ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने कहा कि जिस प्रकार फोन है जितना चलना है उतने का ही वाउचर लग जाता था।

राष्ट्रीय सम्मेलन को कामयाब बनाने के लिए तैयारी बड़े स्तर पर

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने शहरी स्थानीय निकायों के राष्ट्रीय सम्मेलन को कामयाब बनाने के लिए बड़े स्तर पर तैयारी शुरू कर दी है। इस सिलसिले में उन्होंने सोमवार को विधान सभा सचिवालय में प्रदेश सरकार और हरियाणा विधान सभा के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर प्रत्येक व्यवस्था पर विस्तार से चर्चा की। यह सम्मेलन हरियाणा विधान सभा की मेजबानी में जुलाई के पहले सप्ताह में गुरुग्राम में होना प्रस्तावित है। विधान सभा अध्यक्ष ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि राष्ट्रीय महत्व के विषय पर हो रहे इस सम्मेलन को सफल बनाना हम सबकी साझी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के स्वप्न ह्यएक राष्ट्र एक विधायिकाह्न की दिशा में बढ़ता हुआ महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

इस सम्मेलन के निमित्त शहरी स्थानीय निकायों की देश के विकास में सहभागिता को बढ़ाने का रोडमैप तैयार हो रहा है।

हिमानी की मां ने फिर दोहराई सीबीआई जांच की मांग

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के रोहतक निवासी कांग्रेस नेता हिमानी नरवाल की हत्या के मामले में उनकी मां सविता नरवाल ने एक बार फिर सीबाआई जांच की मांग उठाई है। साथ ही उन्होंने आरोप लगाया है कि कांग्रेस के ही एक विधायक ने मामले पर पर्दा डालने की कोशिश की है। सविता के अनुसार हिमानी की हत्या करवाने वाला मास्टरमाइंड कोई और है। उसी ने आरोपी सचिन को मोहरा बनाया है। हिमानी के साथ मैं उससे मिल चुकी हूं। हिमानी की मां ने कांग्रेस के एक विधायक पर आरोपी को बचाने और हिमानी के पैसे ठगने का आरोप लगाया। उनका कहना है कि पुलिस इस मामले की जांच ठीक से नहीं कर रही इधर, पुलिस आरोपी सचिन के खिलाफ चार्जशीट पेश कर चुकी है। इसमें बताया गया है कि सचिन से हिमानी ने 30 हजार रुपए मांगे थे।

भाजपा सरकार के 11 साल 'दुःस्वप्न' से कम नहीं: सांसद कुमारी सैलजा

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा न कहा कि मोदी सरकार के 11 साल का कार्यकाल जनता के विश्वासघात से भरा है। इस कार्यकाल को सांसद ने विफलताओं, खोखले दावों और पूर्ववर्ती सरकारों की संपत्तियों पर ढोल पीटने का एक युग करार दिया है। यह सरकार खुद की कोई ठोस उपलब्धि नहीं गिना सकती। जिन योजनाओं या प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन किया गया, वे अधिकतर यूपीए

सरकार द्वारा प्रारंभ की गई परियोजनाएं थीं।

भाजपा ने सिर्फ पुरानी सरकारों की बनाई हुई संपत्ति को बेचने या पुनः उद्घाटित करने का कार्य किया है जैसे रेलवे स्टेशन, एम्स, सड़क परियोजनाएं, शिक्षा संस्थान आदि। मीडिया को जारी बयान में सांसद कुमारी सैलजा ने कहा है कि सरकार की नीतियां सिर्फ झूठे प्रचार, सोशल मीडिया पर बड़े-बड़े दावों, और जुमलों के सहारे जनता को गुमराह करने तक सीमित रहीं। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि सबका साथ, सबका विकास का नारा अब कुछ का साथ, बाकी का विनाश में बदल गया है। आमजन, किसान, बेरोजगार युवा और महिलाएं सब इस शासन में खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने की सोनीपत महानगर विकास प्राधिकरण की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता

सोनीपत का आधुनिकीकरण करेगी नायब सरकार: डॉ अरविंद शर्मा

चंडीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा है कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सोनीपत में अपार संभावनाएं हैं, इसके मद्देनजर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सोनीपत महानगर विकास प्राधिकरण के माध्यम से सोनीपत के आधुनिकीकरण व सौंदर्यीकरण पर जोर देने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि एसएमडीए में विकास परियोजनाओं के लिए पैसे की कमी नहीं रहने दी जाएगी।

चंडीगढ़ स्थित हरियाणा सचिवालय में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में सोनीपत महानगर

विकास प्राधिकरण की महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसमें कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा, सांसद सतपाल ब्रह्मचारी, सोनीपत विधायक निखिल मदान, राई विधायक कृष्णा गहलावत, गन्नौर विधायक देवेन्द्र कादयान, नगर निगम सोनीपत मेयर राजीव जैन व प्रशासनिक अधिकारी शामिल रहे। कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने एनसीआर में सोनीपत की भूमिका के मुताबिक आधुनिक तरीके से विकास करवाने को लेकर विस्तृत चर्चा की। गोहाना विधानसभा के गांव जाजी, बादशाहपुर माछरी, करेवडी, भटगांव माल्याण, चिटाना, भटाना जाफराबाद, चटिया सोनीपत महानगर विकास प्राधिकरण की सीमा में हैं, लेकिन कंट्रोल एरिया में अधिसूचित नहीं हुए हैं, जिससे एसएमडीए के तहत होने वाले विकास से उनमें देरी हो सकती है। इसलिए इन गांवों को शीघ्र कंट्रोल्ड एरिया नोटिफाई किया जाए। इसपर विभागीय अधिकारियों ने जल्द ही प्रक्रिया को पूरा करवाने का भरोसा दिया। सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि कुंडली, बहालगढ़, मुरथल समेत विभिन्न क्षेत्रों में सीवरेज व्यवस्था को सुदृढ करने, पीने के पानी की बेहतर व्यवस्था करने, सड़कों के सुदृढ़ीकरण, खेल परिसरों को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाएगा। सोनीपत महानगर विकास प्राधिकरण के तहत विभिन्न विकास परियोजनाओं को लेकर वर्तमान स्थिति व उनको लेकर भविष्य में उठाए जाने वाले कदमों पर भी विस्तार से चर्चा हुई। कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भरोसा दिलाया है कि सोनीपत महानगर विकास प्राधिकरण में पैसे की कमी नहीं रहने दी जाएगी। उन्होंने कहा गोहाना के पश्चिमी बाईपास को लेकर भी विस्तार से चर्चा की गई है, ताकि इसकी प्रक्रिया को भी आगे बढ़ाया जा सके।

जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं लोक निर्माण मंत्री ने ली बैठक

चण्डीगढ़/हरियाणा वाटिका एजेंसी

हरियाणा के जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं लोक निर्माण (भवन व सडकें) मंत्री श्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा है कि इस साल के अंत तक आदमपुर में अमृत योजना के तहत चल रहे कार्यों को पूरा कर लिया जाएगा। यहां शहरी तर्ज पर सभी सुविधाएं उपलब्ध हो जाएंगी। श्री रणबीर सिंह गंगवा आज जिला हिसार में जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं लोक निर्माण (भवन व सडकें) विभागों के अधिकारियों की बैठक ले रहे थे। उन्होंने सीवरेज और पेयजल संबंधी कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पीडब्ल्यूडी विभाग तथा मार्केटिंग कमेटी के कार्य शुरू हो चुके हैं। एचएसवीपी के तहत होने वाले कार्यों का टेंडर हो गया है। विकास कार्यों के मद्देनजर जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को निर्देश दे दिए गए हैं कि पाइपलाइन बिछाने का कार्य प्राथमिकता आधार पर पूरा किया जाए। उन्होंने लोक निर्माण विभाग एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक में आदमपुर क्षेत्र में चल रहे विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की तथा सभी निर्माण कार्यों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए ताकि आमजन को समय पर सुविधाएं मिल सकें।

ग्वार बिजाई के लिए अब उपयुक्त समय : डॉ. बी.डी. यादव

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 09 जून। जिले की ग्वार बारानी क्षेत्रों की महत्त्वपूर्ण फसल है जो कम खर्च में अधिक आमदनी देती है तथा साथ ही भूमि की उपजाऊ शक्ति में भी सुधार लाती है जो आगामी सरसों व गेहूं की फसल के लिए बहुत फायदेमंद है तथा इन फसलों में 25 से 30 प्रतिशत नत्रजन की बचत करती है।
ग्वार विशेष्ज्ञ डॉ. बी.डी. यादव कृषि विभाग के तत्वावधान में गांव दड़ौली में आयोजित कृषक शिविर में किसानों को जानकारी दे रहे थे। अनेक किसानों ने शिविर का लाभ उठाया। डॉ यादव ने बताया कि ग्वार की बिजाई के लिए जून माह का दूसरा पखवाड़ा सबसे उपयुक्त है और ग्वार की बिजाई के लिए अब समय शुरू हो गया है। परन्तु जिस किसान के पास नहर का पानी उपलब्ध है। उन्होंने किसानों को बताया कि जडगलन रोग के लिए सूखा बीज उपचार करना फायदेंमद, सस्ता व सरल उपाय है। खाद की मात्रा पर बोलते हुए डॉ. यादव ने कहा कि बिजाई के समय 100 किलो सुपर फास्फेट तथा 15 किलो यूरिया या 35 किलो डीएपी प्रति एकड़ के. हिसाब से ड्रिल करें। इस

प्रोग्राम को आगे बढ़ाते हुए डॉ. यादव ने बुआई के लिए जल्दी बिजाई करने वाली किस्म एचजी 2-20 का 3 किलो बीज प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें तथा लाईन से लाईन की दूरी 2.0 फुट तथा एचजी 365 ग्वार की किस्म के लिए 4 किलो बीज प्रति एकड़ जिसकी बिजाई 1.5 फुट पर करें। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि ग्वार की खड़ी फसल में चैड़ी पत्ती वाले खरपतवार के रोकथाम के किसी भी अनावश्यक खरपतवार नाशक दवा का प्रयोग न करें इसका दुष्प्रभाव आगामी सरसों के फसल के जमाव, बढ़वार तथा पैदावार पर पड़ता है। टयूबैल का खारी व तेलिया (सोडिक) पानी का बिजाई के लिए तथा बाद में खड़ी फसल में कदापि इस्तेमाल न करें इससे जमीन का मुँह बन्द हो जाता है तथा पौधे की बढ़वार रूक जाती है व पैदावार काफी कम मिलती है। इस अवसर पर सेवानिवृत उपमण्डल कृषि अधिकारी डॉ. वृजलाल बैनिवाल मुख्य अतिथि थे। डॉ. वृजलाल ने किसानों को अपने खेत की मिट्टी की जांच करवा कर ही बिजाई करने की सलाह दी। उन्होंने खेती की पुरानी पद्धिति छोडकर नई तकनीक अपनाने पर विषेष जोर दिया और किसानों से आह्वान किया कि किसान कृषि वैज्ञानिक व अधिकारी के संपर्क में रहें जिससे उन्हें आधुनिक तकनीक की जानकारी मिलती रहें। शिविर में 83 मौजूद किसानों को बीज उपचार के लिए दो एकड़ की वेबिस्टिन दवाई, एक मास्क तथा एक जोड़ी दस्ताने हिन्दुस्तान गम एण्ड कैमिकल्स भिवानी की तरफ से मुफ्त दी गई।

विशेष जांच अभियान के तहत पुलिस ने नाकाबंदी कर वाहनों की सघनता से की जांच

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
लोहारू, 09 जून। बीती रात्रि को लोहारू पुलिस ने थाना प्रभारी अशोक कुमार के नेतृत्व में स्पेशल वाहन चैकिंग अभियान चलाया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखना, संदिग्ध गतिविधियों पर अंकुश लगाना और यातायात नियमों का पालन सुनिश्चित करना था। पुलिस टीमों ने विभिन्न नाकों पर बैरिकेड लगाकर वाहनों की गहनता से जांच की। इस दौरान वाहनों को रोककर उनके कागजात, जैसे ड्राइविंग लाइसेंस, रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट और बीमा आदि की जांच की गई। साथ ही, वाहनों में संदिग्ध वस्तुओं की तलाश भी की गई।
थाना प्रभारी अशोक कुमार ने बताया कि सूरजगढ़ नाका, दमकोरा नाका, पिलानी पुलिस नाके की गहनता से चेकिंग की गई है। स्पेशल चेकिंग अभियान के दौरान, यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों को जरूरी सख्त निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि इस दौरान बिना हेलमेट, बिना नंबर प्लेट वाहन चलाने, बिना वैध कागजात के वाहन चलाने और अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले शामिल थे। पुलिस ने संदिग्ध वाहनों की डिक्की को खुलवाकर सर्च भी किया। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा किसी भी आपात स्थिति से निपटने, अपराध को अंजाम देकर भागने वाले, अपराधी को पकड? व अपराधों की रोकथाम हेतु तुरंत कार्रवाई के लिए पुलिस भिन्न-भिन्न स्थानों पर नाके लगाकर चेकिंग कर रही है। ऐसे अभियान आगे भी चलाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि पुलिस हर समय लोगों की सुरक्षा को लेकर तरह-तरह के अभियान चलाकर जानमाल की सुरक्षा का भरसक प्रयास करती है।

गेहूं की आढ़त में देरी से मंडी आढ़तियों में रोष, सूरजमुखी की खरीद नीति पर भी उठाए सवाल

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 09 जून। अनाज मंडी एसोसिएशन की अत्यंत महत्वपूर्ण बैठक मै. तिलक राज धनपत राय के अनाज मंडी स्थित व्यापारिक प्रतिष्ठान पर आयोजित हुई। मंडी प्रधान धनपत राय अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में सरकार द्वारा गेहूं की फसल की आढ़त में की जा रही देरी पर रोष प्रकट किया गया। बैठक पर जानकारी देते हुए अनाज मंडी एसोसिएशन के प्रधान धनपत राय अग्रवाल एवं चेयरमैन त्रिलोचन सिंह हांडा ने बताया कि अप्रैल माह में मंडी में गेहूं की आवक प्रारंभ हो गई थी। तब से लेकर आज तक सरकार की तरफ से आढ़तियों को उनकी आढ़त का एक भी पैसा सरकार ने जारी नहीं किया। प्रधान ने कहा कि शाहाबाद अनाज मंडी का गेहूं की फसल का लगभग 3 करोड़ रुपए का आढ़त का पैसा सरकार की तरफ बकाया है। उन्होंने बताया कि गेहूं के सीजन का मजदूरी का पैसा उसी समय आ गया था लेकिन आदत का पैसे की कोई खोज खबर न होने से आढ़तियों में निराशा का माहौल व्याप्त है। आढ़तियों ने एक स्वर में सरकार से गेहूं की आढ़त का पैसा जल्द से जल्द आढ़तियों के खाते में ट्रांसफर करने का आग्रह किया। उधर सूरजमुखी की सरकारी खरीद पर प्रधान धनपत राय अग्रवाल ने कहा कि गत वर्ष सरकार ने 25 प्रतिशत सूरजमुखी की खरीद सीधे एजेंसियों से की थी तथा शेष 75 प्रतिशत फसल आढ़तियों के माध्यम से खरीदी गई थी। लेकिन इस बार ऐसा लग रहा है कि सरकार सारी फसल डायरेक्ट खरीद रही है। प्रधान ने कहा कि खरीद एजेंसियों के पास लेबर, कांटा, बट्टा, पंखा आदि किसी तरह के कोई साधन उपलब्ध नहीं है। फसल को सुखाकर तैयार करवाने के लिए लेबर आदि सब आढ़तियों की तरफ से ही दिए जा रहे हैं। ऐसे में आढ़तियों के माध्यम से सरकारी खरीद की राह पर आढ़ती टकटकी लगाए बैठे हैं। आढ़तियों ने सरकार से गत वर्ष की भांति सूरजमुखी की 75 प्रतिशत फसल की खरीद आढ़तियों के माध्यम से करवाने की अपील की। सूरजमुखी की सरकारी खरीद आढ़तियों के माध्यम से न होने की वजह से किसानों को भी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। अनाज मंडी में अपनी फसल लेकर आए मौके पर उपस्थित गांव फड़ौली के किसान कुलजीत सिंह, गांव लंगर छन्नी के किसान बलविंदर सिंह, गांव पाडलू के किसान महेंद्र सिंह व देवी दयाल तथा गांव खानपुर के किसान सुखबीर सिंह ने बताया कि सूरजमुखी की खरीद आढ़तियों के माध्यम से न होने से इस बार आढ़ती किसानों को उनकी फसल सुखाकर भराई आदि करवाने में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। उधर खरीद एजेंसी के पास साधनों की कमी के चलते किसानों को अपनी फसल को खरीद के लिए तैयार करवाने में काफी अधिक समय लग रहा है। किसानों ने भी सूरजमुखी की खरीद आढ़तियों के माध्यम से करवाने की बात कही। इस अवसर पर त्रिलोक चंद सिंगला, पवन गौतम, संजय गुप्ता, कंवलजीत सिंह, नरेंद्र गुप्ता, हिमांशु बतरा, गौरव सिंगला, अंकुर सिंगला, गुरचरण सिंगला यशपाल सिंगला एवं संजीव कुमार सहित अन्य आढ़ती गण उपस्थित थे।

करीब 1.80 लाख की लागत से आईटीआई में पानी की टंकी का निर्माण शुरू, विद्यार्थियों को मिलेगी पेयजल समस्या से निजात

जिला पार्षद बाबा वचनाई नाथ ने किया निर्माण कार्य का शुभारंभ

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
सतनाली, 09 जून। स्थानीय राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में पिछले काफी समय से पीने के पानी की समस्या के स्थाई समाधान के लिए जिला परिषद द्वारा संस्थान के विद्यार्थियों के लिए एक पानी की टंकी का निर्माण करवाया जा रहा है। सोमवार को जिला पार्षद योगी वचनाई नाथ द्वारा संस्थान में निर्माण कार्य का शुभारंभ नींव रखकर किया गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में पेयजल की व्यवस्था अति आवश्यक है तथा उनके संज्ञान में आया था कि राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में काफी समय से पीने के पानी की समस्या बनी हुई है।

विद्यार्थियों व शिक्षकों को पेयजल के लिए भारी परेशानी उठानी पड़ती है। ऐसे में इस समस्या समाधान के लिए जिला परिषद कोटे से पानी की टंकी का निर्माण संस्थान में करवाया जा रहा है। पानी की टंकी के निर्माण के बाद विद्यार्थियों व शिक्षकों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होगा ।
वहीं उन्हें पीने के पानी की समस्या से निजात मिलेगी। जिला पार्षद योगी वचनाई नाथ ने बताया कि संस्थान में करीब 1.80 लाख की लागत से पानी की टंकी का निर्माण किया जाएगा। संस्थान स्टाफ व विद्यार्थियों ने इस नेक कार्य के लिए जिला पार्षद बाबा वचनाई नाथ का आभार जताया है। इस मौके पर मा. ओमप्रकाश डागर, ठेकेदार मुनेश कुमार, लिपिक शमशेर सिंह, रोहित कुमार, अनुदेशक करतार सिंह, प्रवीण कुमार, सुनील कुमार, सतपाल, उत्तम कुमार, विकास कुमार, दीपक कुमार शर्मा, संगीता, पूनम, अस्मिता एवं छात्र विनम, अंकुश, तारा सिंह, मोनू, गोपाल सहित समस्त स्टाफ व विद्यार्थी मौजूद रहे।

ट्राले ने मारी गाड़ी को टक्कर, दो महिलाओं सहित तीन बच्चें घायल

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
लोहारू, 09 जून। लोहारू-भिवानी मुख्य सडक मार्ग पर एक तेज रफ्तार ट्राले ने एक गाड़ी को पीछे से टक्कर मार दी जिससे गाड़ी बीच सडक पलट गई। हादसे में दो महिलाओं सहित तीन बच्चों को गंभीर चोटें आई है। पुलिस में दी शिकायत में हनुमान ढ़ाणी भिवानी निवासी ख्यालीराम ने बताया कि गत दिवस वह तथा उसका भाई रतनलाल निवासी कुहानिया जिला झुंझुनू राजस्थान गाड़ी में बैठकर परिवार के साथ ढिगावा से लोहारू की ओर आ रहे थे। जब वे सुबह साढ़े 10 बजे के करीब लोहारू के अमन धर्मकांटे के नजदीक पहुंचे तो पीछे से तेज रफतार से आ रहे एक ट्राले ने उनकी गाड़ी को टक्कर मार दी जिस कारण उनकी गाड़ी पलट गई। इस हादसे में गाड़ी में सवार पारिवारिक सदस्य बीना, कुसुम व छोटे बच्चों हर्षित, प्राची, तेजस घायल हो गए। आसपास के राहगीरों ने उनके वाहन को सीध किया तथा गाड़ी से बाहर निकाल कर उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया। उनका भिवानी के नागरिक अस्पताल में उपचार चल रहा है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर ट्राला के नंबर के आधार पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

स्वच्छता पखवाड़ा : सफाई कर्मचारियों ने की ऋषि मारकंडा नदी की सफाई, श्रद्धालुओं को दिया जागरूकता का संदेश

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 09 जून। नगर पालिका शाहाबाद द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत सोमवार को नगरपालिका के सफाई कर्मचारियों ने ऋषि मारकंडा नदी में विशेष सफाई अभियान चलाया। इस दौरान नदी के आसपास जमा कूड़ा-कचरा, प्लास्टिक व अन्य गंदगी को साफ किया गया। कार्यक्रम का आयोजन नपा सचिव बम्बूल मलिक के दिशा-निर्देशन में तथा सैनिटरी इंस्पेक्टर नरेंद्र कुमार की देखरेख में किया गया। इस अवसर पर सफाई कर्मचारियों ने वहां मौजूद श्रद्धालुओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया और विशेष तौर पर नदी में पॉलीथीन या अन्य अपशिष्ट सामग्री न फेंकने की अपील की। कर्मचारियों ने श्रद्धालुओं को बताया कि धार्मिक स्थलों की

पवित्रता बनाए रखना हम सभी की जिम्मेदारी है और इसके लिए सबसे पहले हमें अपनी आदतों में सुधार लाना होगा। सैनिटरी इंस्पेक्टर नरेंद्र कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत शहर के विभिन्न स्थानों पर विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है। नगर पालिका की टीम द्वारा मंदिरों, सार्वजनिक स्थलों, बाजारों और जल स्रोतों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आमजन को भी इस मुहिम से जोड़ा जा रहा है, ताकि शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाया जा सके। उन्होंने मीडिया के माध्यम से शहरवासियों ने अपील की, शहर को साफ सुथरा बनाने के लिए नगरपालिका का सहयोग करें। नपा सचिव बम्बूल मलिक ने कहा कि स्वच्छता सिर्फ सरकारी कर्मचारियों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसमें नागरिकों की भागीदारी भी जरूरी है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे सार्वजनिक स्थलों और नदियों को गंदा न करें और पॉलीथीन का उपयोग बंद करें। उन्होंने बताया कि आने वाले दिनों में इस तरह के अभियान और भी तीव्र गति से चलाए जाएंगे। इस मौके सफाई दरोगा विक्रम कुमार कृष्ण कुमार, कर्मचंद, राजन, राजेश, चंद्रकांता, मनोज, अविनाश, राहुल, मदन पाल, कृष्ण कुमार, महिपाल, सोहन, अमित कुमार, राजिंदर, सुखबीर, संजीव, सुखविंदर, रिंकू और विकास सहित कर्मचारी उपस्थित रहे।

उत्तर पश्चिम रेलवे एसोसिएशन सेवानिवृत्त कर्मचारियों की कार्यकारिणी का गठन

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
लोहारू, 09 जून। सोमवार को नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन उत्तर पश्चिम रेलवे एसोसिएशन सेवानिवृत्त कर्मचारियों की आवश्यक बैठक संपन्न हुई। जोनल अध्यक्ष केके सक्सेना की अध्यक्षता में नांगल मूंदी से सादुलपुर तक के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की समस्याएं सुनी गई। इसके बाद उत्तर पश्चिम रेलवे एसोसिएशन सेवानिवृत्त कर्मचारियों की कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें हरि किशन को चेयरमैन एवं जेपी गुप्ता को वाइस चेयरमैन नियुक्त किया गया। जोनल अध्यक्ष केके सक्सेना ने बताया कि एसोसिएशन सेवानिवृत्त कर्मचारियों की समस्याओं को लेकर गंभीर है। कर्मचारियों को किसी प्रकार की समस्या न हो इसके लिए बार-बार उच्च अधिकारियों को अवगत करवाया जाता है। एसोसिएशन का कर्मचारी हितैषी कार्य सुचारू रूप से चले इसके लिए कार्यकारिणी का गठन किया गया है। इसमें हरि किशन को चेयरमैन एवं जेपी गुप्ता को वाइस चेयरमैन की जिम्मेवारी सौंपी गई है। इसके अलावा महावीर सिंह, जेपी यादव, श्रीराम यादव, भंवर सिंह, कर्ण सिंह, रामकिशन, इंद्र सिंह को भी अलग-अलग जिम्मेवारी दी गई है। चुने गए सभी प्रतिनिधियों ने कर्मचारी हितों के लिए सदैव तत्पर रहने की बात कही है।

नवयुग स्कूल में एक्टिव लर्निंग विषय पर टीचर्स के लिए ट्रेनिंग सैशन का किया आयोजन

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 09 जून। नवयुग सीनियर सेकेंडरी स्कूल मोहन नगर कुरुक्षेत्र में टीचर्स के लिए ट्रेनिंग सैशन का आयोजन किया गया जिसका विषय एक्टिव लर्निंग रहा। सैशन का शुभारंभ विद्यालय के डायरेक्टर बी.डी. गाबा एवं प्रधानाचार्य डॉ देवेन्द्र अरोड़ा तथा ट्रेनर अभिमन्यु द्वारा माता सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर टीचर्स ट्रेनर अभिमन्यु ने बताया कि एक्टिव लर्निंग का अर्थ है, सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना, बजाय कि सिर्फ निष्क्रिय रूप से जानकारी ग्रहण करना है। यह शिक्षण का एक दृष्टिकोण है जो छात्रों को पाठ में भाग लेने और जानकारी के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करता है।सोचने, लिखने, बातचीत करने और समस्या समाधान के माध्यम से पाठ्यक्रम सामग्री को संसाधित करने के अवसर छात्रों को सीखने के लिए कई रास्ते प्रदान करते हैं।नए ज्ञान को लागू करने से छात्रों को अपनी यादों में जानकारी, अवधारणाओं और कौशल को पूर्व सूचना के साथ जोड़कर, ज्ञान को व्यवस्थित करके और तंत्रिका मार्गों को मजबूत कर-के उन्हें एनकोड करने में मदद मिलती है। लगातार और तत्काल प्रतिक्रिया प्राप्त करने से छात्रों को गलत धारणाओं को दूर करने और पाठ्यक्रम सामग्री की गहरी समझ विकसित करने में मदद मिलती है। गतिविधियों पर काम करने से सामग्री के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने में मदद मिलती है, जिससे छात्रों की सीखने की प्रेरणा बढ़ती है। सांझा गतिविधियों और लक्ष्यों के बारे में प्रशिक्षक और साथियों के साथ नियमित बातचीत कक्षा में सामुदायिक भावना पैदा करने में मदद करती है। प्रशिक्षक छात्रों के काम करते समय उनका अवलोकन करके और उनसे बात करके उनकी सोच के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।यह जानना कि विद्यार्थी सामग्री को किस प्रकार समझते हैं, प्रशिक्षकों को भविष्य में अपने शिक्षण को लक्षित करने में मदद करता है। इसके साथ ही टीचर्स से इस विषय से संबंधित की एक्टिविटीज भी करवाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के डायरेक्टर बी.डी. गाबा, प्रशासक विकास गाबा, उप प्रधानाचार्या रिद्धिमा, मुख्याध्यापिका प्रीति मिश्रा, कोआर्डिनेटर ऋतु चौधरी, अध्यापिका मंजीत, नीतू, परम ज्योति, सोनिया, पायल, हरिंदर, रिहाना,आशा, मोनिका, पूनम, अंजली, कोमल, अध्यापक जसमेर, शक्ति प्रकाश सहित स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

संदिग्ध हालात में महिला की जल कर मौत, मायका पक्ष ने ससुराल वालों पर हत्या का लगाया आरोप

ससुराल पक्ष ने बताया इन्वर्टर में लगी आग, जबकि सरपंच ने दावा किया कि महिला ने खुद पर पेट्रोल डाल की आत्महत्या

हरियाणा वाटिका/एकजोत
शाहाबाद मारकंडा, 09 जून। निकटवर्ती गांव लण्डी में सोमवार को 45 वर्षीय महिला की संदिग्ध परिस्थितियों में जल कर मौत हो गई। मृतका की पहचान सर्वजीत कौर के रूप में हुई है। घटना के बाद ससुराल और मायका पक्ष आमने-सामने आ गए हैं। जहां ससुराल पक्ष इन्वर्टर फटने से आग लगने का दावा कर रहा है, वहीं मायका पक्ष ने इसे सुनियोजित हत्या करार दिया है और ससुराल वालों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। गांव लण्डी के सरपंच कुलबीर का कहना है कि महिला ने आत्महत्या की है। उसने खुद पर पेट्रोल डाल कर आग लगाई है। हिसार के कस्बा बरवाला निवासी मृतका के भाई अनिल कुमार ने बताया कि उनकी बहन सर्वजीत कौर की शादी करीब 20 वर्ष पूर्व गांव लंडी निवासी राकेश के साथ हुई थी। इस दंपत्ति के तीन बच्चे हैं बेटी सिमरन (16), शगुन (14) और बेटा आदर्श (12) हैं। अनिल का आरोप है कि उनकी बहन को

पिछले कई वर्षों से मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा था और ससुराल वाले उसे और बच्चों को मायके वालों से बात नहीं करने देते थे। अनिल ने बताया कि उन्हें सोमवार सुबह सूचना मिली कि उनकी बहन सर्वजीत कौर जल गई है और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जब वे शाहाबाद में आदेश मेडिकल कॉलेज एंव अस्पताल पहुंचे, तो उनकी बहन का शव पहले से वहां पड़ा था। सर्वजीत का शरीर बुरी तरह झुलसा हुआ था। उन्होंने जब ससुराल वालों से घटना की जानकारी लेनी चाही, तो वे टाल-मटोल करने लगे और साफ जवाब नहीं दे पाए। सर्वजीत के भाई ने आरोप लगाया कि राकेश ने इन्वर्टर फटने से आग लगने की बात कही, लेकिन सवाल उठाया कि अगर इन्वर्टर फटा था, तो सिर्फ उसकी बहन ही क्यों झुलसी? घर में मौजूद अन्य किसी सदस्य को खरोंच तक नहीं आई। उन्हें शक है कि यह एक साजिश के तहत उनकी बहन को जिंदा जला कर मारा गया है। पुलिस इस मामले की जांच में जुट गई है। थाना शाहाबाद के एसएचओ सतीश कुमार ने बताया कि महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए एलएनजेपी अस्पताल भेजा गया है। मायका पक्ष की शिकायत के आधार पर मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। उन्होंने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आग लगने के कारण और मौत की असली वजह स्पष्ट हो पाएगी।

पार्षद राजेंद्र बिड़लान ने वार्डवासियों की बैठक लेकर समस्याओं को जाना

हरियाणा
वाटिका/सुरेंद्र सोढी
हिसार, 09 जून। नगर निगम के वार्ड नंबर 16 से नवनिर्वाचित पार्षद राजेंद्र बिड़लान ने वार्ड के गणमान्य व्यक्तियों की एक बैठक पटेल नगर मार्किट में स्थित अपने कार्यालय में बुलाई।

बैठक में उपस्थित लोगों से वार्ड की समस्याओं को जाना।
बैठक में उपस्थित लोगों ने नवनिर्वाचित पार्षद राजेंद्र बिड़लान के समक्ष सीवर से सम्बंधित,स्ट्रीट लाइट, टूटी सडको, बिजली से सम्बंधित सफाई व पीने के पानी से सम्बंधित समस्या रखी। उन्होंने बैठक में उपस्थित लोगों को आश्वासन देते हुए कहा कि वे इन सभी समस्याओं को मेयर प्रवीण पोपली से मिल कर हल करवाने का पूरा प्रयास करेंगे। पार्षद राजेंद्र बिड़लान ने बताया कि सफाई से सम्बंधित का कार्य आज से सुचारू रूप से प्रारंभ करवा देंगे,इसके अलावा तीन सडकों का कार्य शीघ्र प्रारंभ हो जाएगा।इसके अतिरिक्त नई हाई मास्क लाइट भी वार्ड में लगनी प्रारंभ हो जाएगी। उन्होंने बताया कि इस प्रकार की बैठकों का आयोजन करके वे वार्ड की हर समस्या का हल करवाएंगे। इस मौके पर पी ड़ी तंवर सेवानिवृत्त आयकर अधिकारी,पिंकी खन्ना, नरेश महता, सुरेंद्र महता, डॉ जय पाल बागड़ी,सुरेंद्र बिड़लान,लक्ष्मण दास,भारत भूषण शर्मा,कुलदीप गिल,अनिल पांचाल एडवोकेट,अजित,सुरेंद्र नारंग,राजपाल,वतन बिड़लान,सन्नी,विक्की,शम्मी,गुरमेल इत्यादि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।
चित्र परिचय : नगर निगम के वार्ड नंबर 16 से नवनिर्वाचित पार्षद राजेंद्र बिड़लान वार्ड वासियो की बैठक लेते हुए। 09 हिसार 05

वर्ल्ड डोनर्स डे के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर 15 जून को

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
इस्माईलाबाद, 09 जून। मे आई हेल्प यू ग्रुप के प्रधान गौरव गर्ग ने बताया कि 15 जून को अग्रवाल धर्मशाला झांसा में वर्ल्ड ब्लड डोनर्स डे के उपलक्ष्य रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस शिविर में पीजीआई चंडीगढ़ से डॉक्टरों की टीम आएगी। थैलासीमिया पीड़ित बच्चों की मदद के लिए संस्था समय समय पर इस तरह के कैंप का आयोजन करती रहती है ताकि जरुरतमंद बच्चों की समय पर रक्त की जरुरत पूरी होती रहे। उन्होंने बताया कि 15 जून को फादर डे भी है।

पंजाबी सिखलाई कैंप रतिया में जारी

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
रतिया, 09 जून। शहर के फतेहाबाद रोड़ स्थित गुरुद्वारा विश्वकर्मा साहिब में गर्मी की छुट्टियों में बच्चों को मातृ भाषा से जोड़ने के लिए पंजाबी सिखलाई कैंप चल रहा है। वहीं कैंप बारे जानकारी देते हुए कमेटी प्रधान कश्मीर सिंह ने बताया कि जून महीने की गर्मी की छुट्टियों के चलते गुरुद्वारा विश्वकर्मा साहिब में सुबह साढ़े 8 से 10 बजे तक बच्चों को पंजाबी भाषा से जोड़ने के लिए कैंप के माध्यम से अवसर प्रदान किया गया है और साथ में नैतिक शिक्षा संबंधी गतिविधियां सिखाई जा रही है जिसमें बढ़ चढ़ कर बच्चे शामिल हो रहे है और पढ़ाई संबंधी सामग्री कैंप में उपलब्ध करवाई जा रही है।

सूरजमुखी की खरीद आढ़तियों के माध्यम से जल्द शुरू होने का अनुमान: अंकुर

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
इस्माईलाबाद, 09 जून। अनाजमंडी में सूरजमुखी की खरीद जोरों पर चल रही है। वहीं आढ़ती सूरजमुखी की खरीद को आढ़तियों के माध्यम से खरीद करने की मांग भी लगातार कर रहे है और मांग पत्र सौंप कर खरीद आढ़तियों के माध्यम से शुरू करने की मांग कर रहे है। जानकारी के अनुसार खरीद एजेंसी पहले अपना 25 प्रतिशत कोटा पूरा कर आगे की खरीद आढ़तियों के माध्यम से करने का अनुमान है। जिससे आढ़ती अनुमान लगा रहे है कि जल्द ही सूरजमुखी की खरीद आढ़तियों के माध्यम से शुरू हो जाएगी। मार्केट कमेटी सचिव अंकुर ठकराल ने बताया कि मार्केट कमेटी इस्माईलाबाद के अंतर्गत आने वाली तीनों मंडियों ठोल, इस्माईलाबाद व झांसा में सूरजमुखी की खरीद का कार्य वेयरहाउस एजेंसी द्वारा जोरों पर चल रहा है। इस समय खरीद एजेंसी किसान से सीधे तौर पर कर रही है। एजेंसी की पॉलिसी के अनुसार 25 प्रतिशत खरीद एजेंसी किसान से सीधे तौर पर खरीद करेंगी उसके बाद एजेंसी आढ़तियों के माध्यम से आगे की खरीद करेगी। उन्होंने बताया कि एजेंसी का 25 प्रतिशत कोटा पूरा होने वाला है। जिसके चलते अगले दो तीन दिन में आढ़तियों के माध्यम से सूरजमुखी की खरीद शुरू होने का अनुमान है।

गर्मी व लू का प्रकोप शुरू होते ही बिजली के अघोषित कट लगने से लोग परेशान

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो
इस्माईलाबाद, 09 जून। भीषण गर्मी के साथ लू का प्रकोप शुरू होते ही बिजली के अघोषित कट लगने से लोगों को भीषण गर्मी में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। अनाज मंडी में बिजली के बार बार कट लगने से आढ़तियों में भारी रोष पनप रहा है। आढ़ती बलदेव शर्मा, जोगिंदर, संदीप कंसल, जोगध्यान, राजेश कंसल आदि ने बताया कि गर्मी का सीजन शुरू होते ही बिजली के अघोषित कट लगने शुरू हो गए है। मंडी में दोपहर के समय एक घंटे करीब चार से पांच कट लगने से दोपहर के समय आढ़तियों के काफी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है इसके अलावा मंडी में सूरजमुखी व मक्की का सीजन भी चल रहा है। ऐसे में बिजली सप्लाई जाने से बार बार फसल की सफाई का काम रुक जाता है। इसके अलावा बिजली सप्लाई के कट लगने से मंडी में पानी की समस्या भी बन गई है। आढ़तियों ने बिजली विभाग से मांग रखी है। भीषण गर्मी व फसल के सीजन को देखते हुए बिजली सप्लाई में अघोषित कट न लगाए जाए।

क्या कहते है एसएससी

जब इस बारे में बिजली विभाग के एसएससी सुखदेव सिंह ने कहा कि बिजली विभाग की तरफ से पावर हाउस से बिजली सप्लाई में कोई दिक्कत नहीं है। बिजली लाइन में कोई स्पार्किंग, फाल्ट या लोड की वजह से फ्यूज उड़ जाने से बिजली सप्लाई बाधित हो रही है। इसके लिए लाइनमैन को तुरंत बिजली सप्लाई दुरुस्त करने के लिए बोल दिया गया है। सप्लाई में कोई दिक्कत नहीं आने दी जाएगी।

समाधान शिविर में एसडीएम सुरेश कुमार ने सुनी लोगों की शिकायते

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
रतिया, 09 जून। उपमंडलाधीश सुरेश कुमार की अध्यक्षता में उपमंडल स्तर पर समाधान शिविर सोमवार व वीरवार दो दिन प्रत्येक कार्य दिवस पर लगातार आयोजित किया जा रहा है। समाधान शिविर के माध्यम से शिकायतों का समाधान कर प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। एसडीएम सुरेश कुमार ने नागरिकों से आह्वान किया कि प्रशासन द्वारा प्रातः 10 बजे से लेकर 12 बजे तक समाधान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि नागरिक समाधान शिविर में अपनी शिकायतों को रखें और समाधान शिविर का फायदा उठाएं। सोमवार को शिविर में कुल 2 शिकायतें आई, जिसके निवारण के लिए संबंधित अधिकारी को निर्देश दिए गए। समाधान शिविर के माध्यम से उनकी त्रुटियों को दूर कर उन्हें सरकारी योजनाओं को लाभ पहुंचाना सुनिश्चित किया जा रहा है। समाधान शिविर में आमजन प्रॉपर्टी आईडी, परिवार पहचान पत्र, पुलिस विभाग, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं, राशन कार्ड, बिजली, पानी, सिंचाई आदि से संबंधित समस्याएं लेकर लोग पहुंच रहे हैं, जिसका समाधान करने के लिए प्रशासन कार्यवाही कर रहा है। इस अवसर पर डीएसपी नरसिंह सहित विभिन्न विभागों क अधिकारी मौजूद रहे।

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए 13 जून को लघु सचिवालय परिसर में प्रोटोकॉल प्रशिक्षण शिविर का होगा आयोजन

हरियाणा वाटिका/प्रवीण वालिया
करनाल, 09 जून। आयुष विभाग की ओर से 21 जून को आयोजित किये जाने वाले 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां जोरों पर हैं। सभी विभागों में कार्यरत समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए योग प्रोटोकॉल प्रशिक्षण का आयोजन 13 जून को प्रातः 6 बजे से 7:30 बजे तक सेक्टर-12 करनाल में स्थित लघु सचिवालय के प्रांगण में किया जाएगा। जिसमें सभी विभागों के अधिकारी व कर्मचारी भाग लेना सुनिश्चित करेगे। इसको लेकर जिला प्रशासन की ओर से नगराधीश एवं नोडल अधिकारी मोनिका शर्मा द्वारा निर्देश जारी किए गए। यह जानकारी जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. सतपाल ने दी और बताया कि 21 जून को मुख्य कार्यक्रम सुबह 7 से 8 बजे के बीच अनाज मंडी करनाल में आयोजित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि 20 जून को पायलट रिहर्सल अनाज मंडी में सुबह 7 से 8 और योग मैराथन का सुबह 6 बजे एनडीआरआई चौक पर आयोजन किया जाएगा जोकि गीता द्वार से होते हुए एनडीआरआई चौक पर वापिस पहुंचेगी।

बेटियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी : प्रो सोमनाथ सचदेवा

कुवि कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने छात्रा अनुष्का शर्मा को सम्मानित

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 09 जून। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल की 12वीं कक्षा की छात्रा अनुष्का शर्मा को एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने पर सोमवार को कुलपति कार्यालय में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा व कुलसचिव डॉ. वीरेंद्र पाल ने सम्मानित किया। इस अवसर पर कुवि कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने छात्रा अनुष्का शर्मा को आशीर्वाद देते हुए कहा कि बेटियों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है। उन्होंने खिलाड़ी अनुष्का को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए अपने

परिवार व विश्वविद्यालय का नाम रोशन करने पर बधाई दी। छात्रा अनुष्का शर्मा ने 10 से 24 मई तक एएसबीसी द्वारा श्रीलंका के कोलंबिया में आयोजित एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप में 81 किलोग्राम भारवर्ग में रजत पदक प्राप्त किया। वहीं कुलसचिव डॉ. वीरेंद्र पाल ने भी छात्रा को आशीर्वाद देते हुए जीवन में आगे बढ़ने के लिए स्कूल प्रशासन द्वारा हर संभव सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधाचार्य डॉ. सुखविन्द्र सिंह व अनुष्का शर्मा के पिता पवन शर्मा मौजूद रहे।

सूर्य नमस्कार कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु स्कूल सम्मानित

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल में कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा के मार्गदर्शन में सूर्य नमस्कार के सफल आयोजन के लिए पंचकूला में आयोजित कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा पूरे प्रदेश भर के 214 स्कूलों के प्राचार्यों को सम्मानित किया था। इस अवसर पर कुवि कुलपति प्रोफेसर सोमनाथ सचदेवा ने स्कूल के प्राचार्य डॉ. सुखविन्द्र सिंह को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।

विश्व इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर होने वाला योग महाकुंभ : संजीव वर्मा

अब तक 10 लाख लोगों ने 21 जून राज्य स्तरीय योग दिवस के लिए आनलाइन करवाया पंजीकरण

आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा ने प्रशासनिक अधिकारियों, पार्षदों, कॉलेज प्राचार्यों से की बैठक

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 09 जून। आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा ने कहा कि विश्व इतिहास के पन्नों में कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर 21 जून को होने वाला योग महाकुंभ स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। इस बार अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2025 पर कुरुक्षेत्र में होने वाले राज्य स्तरीय योग दिवस के हर लम्हें पर हिन्दुस्तान की नजर होगी। इस बार योग दिवस पर एक लाख से ज्यादा लोग ब्रह्मसरोवर आइकोनिक स्थल पर एक साथ योगा करेंगे। इस दिन कुरुक्षेत्र के साथ-साथ हरियाणा का नाम गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज किया जाएगा। अहम पहलू यह है कि कुरुक्षेत्र के लोग इस नए रिकॉर्ड के साक्षी बनेंगे। आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा सोमवार को लघु सचिवालय के सभागार में प्रशासनिक अधिकारियों, पार्षदों और कॉलेज प्राचार्य की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले महानिदेशक संजीव वर्मा ने पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा से थानेसर हल्का से हजारों की तादाद में लोगों को योग दिवस में शामिल करने के अहम विषयों पर चर्चा की और उपायुक्त नेहा सिंह से योग दिवस के तमाम प्रबंधों तथा पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल से सुरक्षा व्यवस्था के बारे में तैयार की गई योजना के बारे में जानकारी हासिल की है। उन्होंने कहा कि ये कार्यक्रम प्रशासनिक कार्यक्रम ना होकर सार्वजनिक कार्यक्रम है। इसमें मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी स्वयं की संवेदनाओं से जनभागीदारी के लिए लगे हुए हैं। जिस अधिकारी, पार्षद व अन्य संस्थान को जो भी जिम्मेदारी दी जाती है, उसको ईमानदारी के साथ पूरा करना होगा। ऐसे में हमारा दायित्व पहले से ज्यादा बढ़ जाता है। इस दायित्व

को गंभीरता स लेते हुए ही विश्व रिकॉर्ड कायम हो सकेगा। उन्होंने कहा कि हरियाणा वालों ने पूरी दुनिया को योग सिखाकर ही योग गुरु का दर्जा हासिल किया है। 21 जून को अनुशासन और प्रोटोकॉल के साथ योग करके गिनीज बुक में विश्व रिकॉर्ड दर्ज करना है, इसके लिए जिला प्रशासन ने आवेदन भी कर दिया है। सभी ने मिलकर इस रिकॉर्ड को बनाने में अपना-अपना महत्वपूर्ण योगदान देना है। उन्होंने कहा कि 21 जून को योग करने के लिए अब तक प्रदेश के 10 लाख लोगों ने आनलाइन माध्यमों से पंजीकरण किया है। आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा ने कहा कि जिस विभाग को योग करने के लिए जो सदस्य लाने की जिम्मेदारी दी गई है, वो संख्या को पूरा करना सुनिश्चित करें। केडीबी और नगर परिषद शौचालय का प्रबंध करेंगे। इसके अलावा नगर परिषद द्वारा मेला ग्राउंड को समतल करने का कार्य किया जाएगा। इस कार्यक्रम के लिए प्रचार-प्रसार पर जोर दिया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में इमरजेंसी के सभी प्रबंधों को पुख्ता किया जाना सुनिश्चित करें। सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता प्रबंध हो।

योग कार्यक्रम में हिस्सा लेने वालों को टी-शर्ट और औषधीय पौधा किया जाएगा वितरित

आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम कुरुक्षेत्र में हिस्सा लेने वालों को एक-एक टी-शर्ट और एक-एक औषधीय पौधा वितरित किया जाएगा। साथ ही 10 हजार को पहले आने पर मैट साथ लेकर जाने दिया जाएगा। इसके अलावा जल-पान रिफ्रेशमेंट का भी प्रबंध किया गया है। उन्होंने कहा कि योग कार्यक्रम में हिस्सा लेने वालों को लाने और वापस उसी स्थान पर छोड़कर आने की भी व्यवस्था की गई है।

योगा डे के लिए तीन तरह से करवा सकते हैं पंजीकरण

आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा ने कहा कि 21 जून को योग दिवस के लिए आनलाइन पंजीकरण करवाया जा रहा है। कोई भी व्यक्ति तीन तरह से पंजीकरण करवा सकता है। इनमें मोबाइल नंबर 9501131800 पर मिस कॉल करें, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट इंटरनेशनल योग डे एचआरवाई डॉट इन पोर्टल पर जानकारी दर्ज करके और विभाग द्वारा तैयार किए गए बार कोड को स्कैन करके पंजीकरण करवा सकते हैं।

कार्यक्रम को सफल बनाने में दिन-रात कर रहे काम:सुभाष सुधा

पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम को ऐतिहासिक और भव्य बनाया जाएगा। इसके लिए उनकी टीम दिन-रात कार्य कर रही है। शहर और गांवों में लोगों को योग के साथ जोड़ा जा रहा है। साथ ही उनके कार्यक्रम में जाने-जाने का भी प्रबंध किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से पूरे विश्व में कुरुक्षेत्र का एक बार फिर नाम होगा। विश्व स्तर पर एक रिकॉर्ड कायम होगा। उन्होंने सभी पार्षदों की तरफ से पूरा सहयोग किए जाने का आश्वासन भी दिया।

एक सेक्टर में 1 हजार लोगों की सीटिंग का बनाया प्लान:नेहा सिंह

उपायुक्त नेहा सिंह ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए ब्रह्मसरोवर और मेला ग्राउंड में कार्यक्रम किया जाना तय हुआ है। दोनों जगहों को सेक्टरों में बांटा गया है। प्रत्येक सेक्टर में एक हजार लोगों की सीटिंग की गई है। लोगों की मदद के लिए प्रशासन की तरफ से नोडल अधिकारी और पतंजलि व संस्थाओं की तरफ से एक-एक वालंटियर नियुक्त किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मेला ग्राउंड में स्कूल व कॉलेज के विद्यार्थियों को बिठाया जाएगा। शहर, गांवों, संस्थाओं और पतंजलि की ओर से आने वालों को ब्रह्मसरोवर परिसर में बनाए गए सेक्टरों में बिठाया जाएगा। इस मौके पर पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा, मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी, उपायुक्त नेहा सिंह, पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल, पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के केन्द्रीय प्रभारी राकेश, अतिरिक्त उपायुक्त सोनू भट्ट, एसडीएम थानेसर अमन कुमार, एसडीएम पंकज सेतिया, एसडीएम डा. चिनार चहल, एसडीएम कपिल कुमार, डीएमसी सतेंद्र सिवाच, जिला परिषद सीईओ शंभू सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

शहर में सफाई व्यवस्था को दुरुस्त किया जाए: गुलजार मलिक

नवनियुक्त डीएमसी गुलजार मलिक ने शहरी स्थानीय निकाय अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक
भिवानी, 09 जून। गुलजार मलिक एचसीएस ने सोमवार को भिवानी नगर परिषद में डीएमसी का कार्यभार संभाला। उनके पास चरखी दादरी डीएमसी का भी कार्यभार है। इस दौरान मलिक ने शहरी स्थानीय निकाय अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे शहर में सफाई व्यवस्था को दुरूस्त करें। लोगों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े।

डीएमसी ने निर्देश देते हुए कहा कि नागरिक अपने काम के लिए नगर परिषद कार्यालय में आते हैं। लोगों के काम तुरंत प्रभाव से किए जाएं। एक कार्य के लिए लोगों को बार-बार न आना पड़े। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि नगर

परिषद से संबंधित कार्य करवाने में लोगों को किसी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। उन्होंने निर्देश दिए कि शहर में कचरे का उठान नियमित रूप से किया जाए। जगह-जगह गंदगी के ढ़ेर नहीं होने चाहिए।

डीएमसी ने नगर परिषद के अधिकारियों व कर्मचारियों से परिचय लिया और उनकी कार्य प्रणाली की जानकारी ली। उन्होंने नगर परिषद में संसाधनों के बारे में भी विस्तार से पूछा। इस दौरान नगर परिषद के अधिकारियों व कर्मचारियों ने नवनियुक्त डीएमसी का स्वागत किया। इस मौके पर नप ईओ राजा राम, सफाई निरीक्षण विकास देशवाल सहित अनेक स्टाफ सदस्य मौजूद रहें।

युवाओं का जीवन निर्माण शिविर का लक्ष्य : डॉ. विद्यालंकार

हरियाणा वाटिका/एकजोत
कुरुक्षेत्र, 09 जून। गुरुकुल कुरुक्षेत्र और आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के संयुक्त तत्त्वावधान में गुरुकुल परिसर में पांच दिवसीय आर्यवीर योग एवं जीवन निर्माण शिविर का आज राज्यपाल आचार्य देवव्रत के ओएसडी एवं प्रख्यात वैदिक विद्वान डा. राजेन्द्र विद्यालंकार द्वारा किया गया। डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने कहा कि आर्यवीर दल के शिविरों का मुख्य उद्देश्य युवाओं के जीवन का निर्माण करना है क्योंकि आज देश के युवाओं सही मार्गदर्शन की महती आवश्यकता है, यदि देश के युवा सही दिशा में अपनी ऊर्जा का उपयोग करें तो वह न केवल स्वयं महानता की श्रेणी को प्राप्त करेगा बल्कि देश को भी उन्नति की ओर लेकर जाएगा। इस अवसर पर गुरुकुल के प्रधान

राजकुमार गर्ग, शुगनी देवी स्कूल लाडवा के प्रधान अनिल आर्य, समाजसेवी सुशील सेठ, आर्य समाज यमुनानगर के प्रधान मोहित आर्य, आचार्य दयाशंकर, आर्य विद्यापीठ बस्तली के निदेशक कृष्ण आर्य, शिविर संयोजक जयपाल आर्य, प्रशिक्षण प्रमुख संजीव आर्य सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। डॉ. राजेन्द्र ने शिविर में आए युवाओं को अपने जीवन में अनुशासन को आत्मसात करने का आह्वान किया क्योंकि अनुशासन और एकाग्रता को जीवन का अभिन्न अंग बनाने वाले एक दिन विश्व पटल पर अपना और अपने कुल का नाम चमकाते है। शिविर संयोजक जयपाल आर्य ने बताया कि शिविर में कुरुक्षेत्र, कैथल, जींद, पानीपत, करनाल आदि जिलों के लगभग 500 युवा भाग ले रहे हैं जिन्हें वैदिक सिद्धान्तों के साथ कुशल प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में योगासन, डम्बल, लेजियम, जूडो-कराटे, लाठी संचलन, सूर्य नमस्कार, चन्द्र नमस्कार आदि प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण प्रमुख और गुरुकुल के मुख्य संरक्षक संजीव आर्य ने प्रेरणादाई गीत के माध्यम से युवाओं को जीवन में सदविचारों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।

सिरसा में कबीर जयंती समारोह ऐतिहासिक होगा : जैकी गर्ग

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
रतिया, 09 जून। संत शिरोमणि संत कबीर साहेब की जयंती इस बार सिरसा में 11 जून को मनाई जाएगी जिसके मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी होंगे और समारोह की अध्यक्षता भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य व पूर्व लोकसभा सिरसा की लोकप्रिय सांसद श्रीमती सुनीता दुग्गल करेंगी।यह बात भाजपा रतिया शहर के मंडल सचिव जैकी गर्ग ने आज संत शिरोमणि गुरु कबीर साहेब जी की जयंती का निमंत्रण देने के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए कही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में जबसे भाजपा सरकार बनी है तब से धर्म गुरुओं की प्रदेश स्तर पर सरकार द्वारा जयंतियां मनाई जाती है।इन जयंतीयों का मनाने का उद्देश्य सभी समाजों को मान सम्मान देना है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि संत कबीर की जयंती समारोह इस बार ऐतिहासिक होगा । उन्होंने अपील करते हुए कहा कि इस ऐतिहासिक समारोह में ज्यादा से ज्यादा संख्या में भाग ले। इस अवसर पर उनके साथ भाजपा शहरी मंडल रतिया के उप प्रधान प्रवीण गर्ग व भाजपा के अनेक कार्यकर्ता मौजूद थे।

एसडीएम ने बाल और बंधुआ मजदूरी रोकने के लिए अधिकारियों को कारगर कदम उठाने के दिए निर्देश

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
रतिया, 09 जून। उपमंडलाधीश सुरेश कुमार ने बाल और बंधुआ मजदूरी रोकने के लिए अधिकारियों को कारगर कदम उठाने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि उपमंडल में ईंट भट्ठे, होटल, ढाबे, फैक्ट्री और दुकानों पर काम कर रहे किसी भी जगह पर बाल और बंधुआ मजदूर मिलेंगे तो उनके मालिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई अमल में लाई जाए। उन्होंने कहा कि बाल एवं बंधुआ मजदूरी को रोकने के लिए नियमित रूप से चेकिंग अभियान चलाया जाए। एसडीएम सुरेश कुमार ने कहा कि बंधुआ मजदूरी में संलिप्त मिले तो उनकी 112 पर शिकायत दर्ज करवाएं। उन्होंने समिति के सदस्यों को निर्देश दिए कि वे नियमित चैकिंग करे और लोगों को इस बारे में जागरूक करे। उन्होंने कहा कि बच्चों को शिक्षा के अधिकार के तहत शिक्षित करना चाहिए तथा उन्हें नियमित रूप से स्कूलों में भेजना चाहिए।

इस मौके पर डीएसपी नरसिंह, नायब तहसीलदार अशोक कुमार, एस. एच. ओ राजबीर सिंह, बीडीपीओ हनीश कुमार, तहसील कल्याण अधिकारी कवल सिंह, बलदेव सिंह गरोहा सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

नहर में नहाना पड़ेगा महंगा: पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने जारी की विशेष एडवाइजरी

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
फतेहाबाद, 09 जून। जिले में बढ़ते तापमान और गर्मी के प्रकोप के बीच नागरिकों द्वारा नहरों में नहाने की घटनाएं सामने आ रही हैं, जो न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि जानलेवा भी साबित हो सकती हैं। इसे देखते हुए पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धांत जैन, आईपीएस ने विशेष एडवाइजरी जारी की है, जिसमें स्पष्ट किया गया है कि अब नहरों में नहाने वालों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 223 के तहत कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

नहरों में नहाने के खतरे

श्री जैन ने बताया कि नहरों में नहाना न केवल आपकी जान के लिए खतरा है, बल्कि यह जल आपूर्ति और सिंचाई व्यवस्था को भी बाधित करता है। इसके अलावा, सार्वजनिक संपत्ति के दुरुपयोग की श्रेणी में आने वाले इस कृत्य को अब गंभीरता से लिया जाएगा।

बीएनएस धारा 223: दंडनीय अपराध

बीएनएस की धारा 223 सार्वजनिक व्यवस्था, सुरक्षा या लोक सेवाओं में विघ्न डालने वाले कार्यों को दंडनीय बनाती है। नहर जैसी संरचनाओं में बिना अनुमति प्रवेश करना, स्नान करना या छलांग लगाना अब इस धारा के तहत अपराध माना जाएगा, जिसके तहत जुमार्ना या कारावास या दोनों की सजा का प्रावधान है।

नागरिकों से अपील

पुलिस अधीक्षक ने सभी नागरिकों, विशेषकर युवाओं और अभिभावकों से अपील की है कि वे नहर में नहाने जैसी खतरनाक और अवैध गतिविधियों से बचें और अपने बच्चों को भी इसके लिए जागरूक करें। उन्होंने कहा कि यह एडवाइजरी जनहित में जारी की गई है और इसका उल्लंघन करने वालों को किसी भी स्थिति में बख्शा नहीं जाएगा।

रतिया पुलिस ने मारपीट करने के मामले में एक व्यक्ति को किया शामिल तफ्तीश

हरियाणा वाटिका/नंदकिशोर
रतिया, 09 जून। पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धांत जैन, आईपीएस के दिशा-निर्देशानुसार चलाए जा रहे अपराध मुक्त अभियान के तहत थाना शहर रतिया पुलिस ने राजनीतिक रंजिश के चलते मारपीट और जान से मारने की धमकी देने के गंभीर मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सर्वजीत सिंह पुत्र मेजर सिंह निवासी भुंडरावास के रूप में हुई है, जिसे पूछताछ के बाद जमानत पर रिहा कर दिया गया।

थाना शहर प्रभारी उपनिरीक्षक रणजीत ने जानकारी देते हुए बताया कि 23 मई को धर्मपाल पुत्र केवल राम निवासी अरोड़ा कॉलोनी, रतिया की शिकायत पर संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया था। शिकायतकर्ता ने बताया कि वह अपने निजी कार्य के लिए इऊढड कार्यालय रतिया गया हुआ था और उसके साथ सतवीर पुत्र चेतराम निवासी भूंदड़वास भी मौजूद था। इस दौरान भुंडरावास के सरपंच सर्वजीत सिंह वहां पहुंचा और शिकायतकर्ता को घूरते हुए गालियां देने लगा।

शिकायत के अनुसार, जब शिकायतकर्ता रऊड कार्यालय की ओर बढ़ा, तो आरोपी ने रास्ते में उसे रोक कर मारपीट शुरू कर दी। थप्पड़, मुक्के और लात-घूंसे मारते हुए आरोपी ने उसे जमीन पर गिरा दिया। उसी समय मखन सिंह पुत्र गुरमेल सिंह, चमकौर सिंह, अमृतपाल सिंह, मनजीत सिंह और कुलविंद्र सिंह भी मौके पर पहुंचे और उन्होंने भी शिकायतकर्ता और उसके साथी सतवीर के साथ मारपीट और गाली-गलौच की।

संपादक की कलम से

धरती का ख्याल रखना जरूरी है

देशी बीज न केवल सौंदर्य से भरपूर हैं बल्कि स्वाद में भी बेजोड़ हैं। औषधि गुणों से सम्पन्न हैं और स्थानीय मिट्टी पानी और हवा के अनुकूल हैं। आखिर मनुष्य ने ही जंगलों से तरह-तरह की फसलों के गुणधर्मों की पहचान कर खेतों में उन्हें उगाया है और इसी के परिणामस्वरूप आज हम बीजों के मामले में समृद्ध हैं। लेकिन आज हमने देशी बीजों की संपदा खो दी है, इसी को संजोने व संवारने का प्रयास जन स्वास्थ्य सहयोग में किया जा रहा है।

मौजूदा समय में पर्यावरण का संकट सबसे बड़ी चिंताओं में से एक है। पर्यावरण, का जो नुकसान हमने पिछले कुछ दशकों में किया है, वह इसके पहले सैकड़ों सालों में नहीं हुआ। जो नदियां सदियों से बहती रहीं, कुछ ही सालों में सूख गईं, जो धरती सबका पालन-पोषण करती रही, उसकी जीवनदायिनी क्षमता खतरे में है। मिट्टी-पानी का प्रदूषण हो रहा है।

दो दिन पहले 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस था, यह हमें यह सोचने के लिए विवश करता है कि कैसे हम पर्यावरण को बचाए, कैसे उसका संरक्षण करें, आज के इस कॉलम में इस पर ही चर्चा करना उचित रहेगा, जिससे इस दिशा में हम कुछ मिलकर कर सकें।

मैं यहां पर्यावरण किस तरह संकट में इसको बताने की कोशिश नहीं करूंगा, क्योंकि यह तो सर्वविदित है। हमारी सदानीरा नदियां प्रदूषित हो रही हैं, जंगल कम हो रहे हैं, खेतों की मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हो रही है, हवा प्रदूषित हो रही है, भूजल नीचे खिसक रहा है इत्यादि। बहुत ही ऐसे संकट आ रहे हैं, जो कुछ दशक पहले तक नहीं थे।

लेकिन कई लोग कह सकते हैं, यह तो वैश्विक समस्या है, इसमें हम क्या कर सकते हैं। यह वैश्विक समस्या है पर इसका असर स्थानीय स्तर पर होता है। इसे कुछ हद तक स्थानीय स्तर पर कम किया जा सकता है। जैसे इस पर्यावरण दिवस की थीम है, प्लास्टिक प्रदूषण। हम देखते हैं कि हमारे शहर की नालियां, सड़कें प्लास्टिक कचरे से पटे पड़े हैं। यह दिन हमें इससे निपटने के लिए सामूहिक कार्रवाई करने के लिए संदेश देता है, प्रेरित करता है।

मैं जब कभी ट्रेन की यात्रा करता हूं, एक चीज बहुत खटकती है, वह है रेल पटरियों के दोनों ओर पॉलीथीन, पानी की बोतलें बिखरी पड़ी दिखती हैं। जहां तक नजरें जाती हैं, यही दिखता है। इसी तरह, सड़कों के दोनों ओर कचरा पड़ा रहता है। सब्जी, दूध या किराना सामान लेने के लिए पॉलीथीन का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे कचरा होता रहता है। शहरों व कस्बों में रोजाना कचरे की गाड़ी कचरा उठाकर ले जाती है। कर्मचारी इसके लिए मेहनत करते हैं। लेकिन दूसरे दिन उतना ही कचरा फिर हो जाता है। यह क्रम बना रहता है।

यानी हमने कचरा संस्कृति को अपना लिया है। चाहे जितना ही कचरा साफ करो, कचरा पैदा होता ही रहेगा। यूथ एंड थ्रो (इस्तेमाल करो और फेंको) की संस्कृति ही कचरा संस्कृति है। हम कोई भी दुकान देखें, वहां छोटी छोटी थैलियां, पॉलीथीन पैक इत्यादि टंगे रहते हैं। इन सबके कारण हमारी नदियां, झीलें, तालाब सभी प्रदूषित हो रहे हैं। मिट्टी-पानी भी प्रदूषित हो रहा है।

हम लोग बचपन में देखते थे। कोई ज्यादा कचरा नहीं होता था। जो भी कचरा पैदा होता था, उससे जैव खाद बनाई जाती थी, जिससे खेतों की मिट्टी उर्वर बनती थी। गांवों में पशु होते हैं, गोबर–गोमूत्र होता है, उससे गोबर खाद बनती थी। खेतों में अच्छी फसलें होती थीं।

मुझे कई आदिवासी गांवों में जाने का मौका मिला है। उनके घर व गांव बहुत ही साफ सुथरे होते हैं। कुछ जगहों पर अब भी सरई पत्तों की पत्तल व दोने में खाना खाया जाता है। गाय उन पत्तों को खा लेती है। प्लेट का इस्तेमाल नहीं किया जाता, जिससे पानी की बचत होती है। यानी वहां कचरा पैदा नहीं होता। वे प्रकृति से उतना ही लेते हैं, जितनी उनको जरूरत है। इससे ज्यादा नहीं।

इसी प्रकार, हमें मिट्टी-पानी, देसी बीजों के संरक्षण की अच्छी परंपराओं से सीखना चाहिए। संकर बीजों के आने से अधिकांश देसी बीज लुप्त हुए हैं। लेकिन अब भी कई जगहों पर किसान, समूह और स्वयंसेवी संस्थाएं देसी बीजों की खेती के संरक्षण व संवर्धन में लगे हैं।

उत्तराखंड के बीज बचाओ आंदोलन ने इस दिशा में उल्लेखनीय काम किया है। इसके प्रणेता विजय जड़धारी हैं। उन्होंने मुझे बताया कि बारहनाजा का शाब्दिक अर्थ बारह अनाज है,पर इसके अंतर्गत बारह अनाज ही नहीं बल्कि दलहन, तिलहन, शाक-भाजी, मसाले व रेशा शामिल हैं। इसमें 20-22 प्रकार के अनाज होते हैं।

इन अनाजों में कोदा (मंडुवा), मारसा (रामदाना), ओगल (कुट्टू), जोन्याला (ज्वार), मक्का, राजमा, गहथ (कुलथ), भट्ट (पारंपरिक सोयाबीन), रैयास (नौरंगी), उड़द, सुंटा, रगड़वांस, तोर, मूंग, भगंजीर, तिल, जख्या, सण (सन), काखड़ी इत्यादि।

विजय जड़धारी बताते हैं कि मंडुआ बारहनाजा परिवार का मुखिया कहलाता है। असिंचित व कम पानी में यह अच्छा होता है।

पहले मडुंवा की रोटी ही लोग खाते थे, जब गेहूं नहीं था। पोषण की दृष्टि से यह भी बहुत पौष्टिक है।

इसी प्रकार, उन्होंने उनके जड़धार गांव के उजड़ चुके जंगल को भी हरा-भरा कर दिया। इसके लिए जंगल को आराम दिया, यानी उसकी

अब गुजरात में न्याय की धज्जियां उड़ाता बुलडोजर राज

- डॉ.इंदिरा हिरवे व डॉ.नेहा शाह

बुलडोजरों की मदद से तोड़फोड़ 2023 में शुरू हुई थी पर वर्ष 2024 में गुजरात में बहुत अधिक कार्रवाइयां देखी गईं। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल को 'दादा' के नाम से जाना जाता है पर उनके शासन काल में बुलडोजर राज को 'दादा का बुलडोजर' कहा जाने लगा है। गुजरात में बुलडोजरों का मुख्य फोकस सरकारी जमीन पर अवैध अतिक्रमण हटाने पर रहा है।

दुनिया भर में निर्माण कार्यों के लिए बुलडोजरों का उपयोग किया जाता है लेकिन 'नए भारत' में बड़े पैमाने पर अपराधियों, दंगाइयों या माफिया से जुड़े कहे जाने वाले लोगों के घरों और संपत्तियों को नष्ट करने के लिए विनाश के एक उपकरण के रूप में उनका उपयोग किया जा रहा है। ज्यादातर मामलों में लक्षित गरीब लोग होते हैं उनमें से कई अल्पसंख्यक समूहों से होते हैं और इस तरह बुलडोजर एक नए राजनीतिक उपकरण में बदल जाता है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहले मुख्यमंत्री थे जिन्होंने तत्काल न्याय के लिए एक असाधारण उपकरण के रूप में बुलडोजरों का उपयोग किया। इस प्रथा को अब प्रचलित किया जा रहा है। अन्य राज्य भी इसका अनुसरण कर रहे हैं।

ताजा मामला गुजरात सरकार का है जिसने पहले से ही झुग्गी उन्मूलन के लिए कार्यक्रम शुरू कर दिए हैं। ये स्लमों के पुनर्वास और पुनर्विकास हेतु विनियमन- 2010 अधिनियम के रूप में ('गुजरात स्लम पुनर्वास नीति- पीपीपी-2013ज [झुग्गीवासियों के पक्के घरों में पुनर्वास के लिए] और 'गुजरात किफायती आवास नीति-2014' ('शहरी गुजरात को झुग्गी मुक्त बनाने') आए थे जिसमें गुजरात राज्य में स्लम क्षेत्रों के सुधार तथा उनके विकास का प्रावधान है। ये सभी गुजरात सरकार और अहमदाबाद नगर निगम द्वारा घोषित आधिकारिक नीतियां हैं।

अतिक्रमण के खिलाफ उठाए गए कदमों की एक श्रृंखला में हाल के दिनों में दो प्रमुख अभियानों में बुलडोजरों का उपयोग किया गया है। अप्रैल और मई 2025 में अहमदाबाद में, विशेष रूप से चंदोला झील क्षेत्र में घर तोड़े गए। अहमदाबाद शहर के दक्षिणी भाग में स्थित चंदोला झील एक अर्ध-सूखे झील का क्षेत्र है जो लगभग 109 हेक्टेयर भूमि को कवर करता है। यह आधिकारिक तौर पर अहमदाबाद नगर निगम के अंतर्गत आता है। झील पर अतिक्रमण कुछ किसानों द्वारा छोटे पैमाने पर फसल की खेती के साथ शुरू हुआ।

गरीब परिवारों ने रहने के लिए धीरे-धीरे झील के किनारों पर कब्जा करना शुरू कर दिया और समय के साथ व्यापक क्षेत्र पर कब्जा किया गया। यहां के अधिकांश परिवार छोटे-मोटे व्यापार और विनिर्माण कार्यों में लगे हुए थे जो निर्माण कार्य, घरेलू काम, सब्जियां बेचने और अन्य दिहाड़ी काम करने वाले मजदूर थे। झील के एक छोटे से हिस्से पर, जिसे बंगला-वास के नाम से जाना जाता है, बांग्लादेशी प्रवासियों का कब्जा था। समय के साथ इस क्षेत्र ने छोटे स्थानीय क्षेत्र की व्यावसायिक गतिविधियों के एक पारिस्थितिकी तंत्र को विकसित किया। कुछ लोगों ने कानून की सीमाओं को तोड़ा और स्थानीय गिरोहों को जन्म दिया।

अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) द्वारा शुरू किए गए इस तोड़फोड़ से 7,000 से अधिक संपत्तियां प्रभावित हुई हैं जो ज्यादातर अल्पसंख्यक समुदाय के सदस्यों के स्वामित्व वाली हैं। कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों पर हुए हमले के चार दिन बाद तोड़फोड़ की कार्रवाई हुई। स्थानीय रिपोर्टों में कहा गया है कि अधिकारियों ने चंदोला के निवासियों को बिना दस्तावेजों वाले बांग्लादेशी अप्रवासियों के संदेह में हिरासत में लेना शुरू किया।

बुलडोजरों की मदद से तोड़फोड़ 2023 में शुरू हुई थी पर वर्ष 2024 में गुजरात में बहुत अधिक कार्रवाइयां देखी गईं। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल को 'दादा' के नाम से जाना जाता है पर उनके शासन काल में बुलडोजर राज को 'दादा का बुलडोजर' कहा जाने लगा है। गुजरात में बुलडोजरों का मुख्य फोकस सरकारी जमीन पर अवैध अतिक्रमण हटाने पर रहा है।

राज्य सरकार ने 2024 के अंत तक पूरे गुजरात में कई बार बुलडोजरों का प्रयोग किया। प्रमुख घटनाएं अहमदाबाद शहर, मेहसाणा, कच्छ, जूनागढ़, द्वारका, वडोदरा, सूरत, नवसारी और अन्य शहरों में हुई हैं। जिन क्षेत्रों में ये कार्रवाइयां की गईं वे ज्यादातर गरीब, वंचित समूहों की बस्तियां हैं जिनमें अल्पसंख्यक भी शामिल हैं। इन लोगों पर अवैध गतिविधियों और स्थानीय अपराधों में शामिल होने का आरोप है। जैसा कि कार्रवाई स्थलों से दिखाई पड़ता है कि बुलडोजर का कहर गरीब क्षेत्रों में हुआ और उसके दायरे में कभी भी पड़ोस के संपन्न इलाके नहीं थे। 2022 में एक स्थानीय पार्षद ने एक मानवाधिकार वकील के साथ मिलकर एएमसी से झुग्गी पुनर्वास योजना के तहत यहां रहने वाले परिवारों के पुनर्वास पर विचार करने का अनुरोध किया पर एएमसी ने इस विषय को इस आधार पर आगे नहीं बढ़ाया कि उस समय उसके पास कोई योजना नहीं थी। यह बात पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज (पीयूसीएल), अहमदाबाद के मानवाधिकार वकील आनंदवर्धन याग्निक ने बताई। याग्निक अहमदाबाद तोड़-फोड़ सहित मानवाधिकारों के उल्लंघन से संबंधित कानूनी मामलों में शामिल रहे हैं। उन्होंने विशेष रूप से हाशिए के समुदायों को लक्षित करने वाले विध्वंस के खिलाफ यह तर्क देते हुए कहा है कि ऐसी तोड़-फोड़ अक्सर उचित कानूनी प्रक्रियाओं के बिना किए जाते हैं जिससे विस्थापन और कठिन होता है।

पहलगाम की घटना के बाद गुजरात नेतृत्व ने कथित तौर पर चंदोला क्षेत्र पर अपना ध्यान केंद्रित किया और एएमसी की मदद से कार्रवाई शुरू कर दी। 26 अप्रैल को तड़के 3 बजे एक टीम तलाशी अभियान के लिए आई। उसने 890 व्यक्तियों की पहचान की और उन्हें पुलिस सुरक्षा में अंधेरी रात में 4 किमी से अधिक दूर स्थित कांकरिया फुटबॉल मैदान ले गई। उन्हें वहां तीन दिनों तक रखा गया। अधिकारियों ने अंततः पाया कि इनमें से केवल 150 व्यक्ति (16-17 प्रतिशत) अवैध रूप से बांग्लादेशी प्रवासी थे। 29 अप्रैल को 2,000 नगरपालिका कर्मचारियों और पुलिसकर्मियों की टीम, एक दर्जन से अधिक बुलडोजर, लगभग 200 ट्रकों के साथ चंदोला झील पहुंची और उसने निवासियों के घरों, दुकानों और अन्य संपत्तियों को ढहाना शुरू कर दिया। लगभग 3,000 महिलाओं, बच्चों एवं पुरुषों को 44 डिग्री सेल्सियस के तापमान में भीषण गर्मी में, खुले में रहने को मजबूर कर दिया। पीयूसीएल इस मुद्दे पर एएमसी के खिलाफ मुकदमा लड़ रहा है और उसकी रिपोर्टों में ये विवरण दिया गया है। कार्रवाई करने वालों को इस बात की कोई चिंता नहीं थी कि विस्थापित कहां जाएंगे और कहां रहेंगे। अगले दिन राष्ट्रीय समाचार पत्रों में यह खबर छपी कि सरकार ने चंदोला झील से अवैध रूप से बसे बांग्लादेशियों को सफलतापूर्वक बाहर निकाल दिया है लेकिन उसमें यह उल्लेख नहीं था कि उनमें से अधिकांश अप्रवासी नहीं बल्कि भारतीय नागरिक थे।

चंदोला झील स्थल पर पूरी कवायद कई सवाल उठाती है, जिनमें सबसे उल्लेखनीय यह है कि झुग्गी कॉलोनी पिछले कुछ वर्षों में अधिकारियों की जानकारी में ही बढ़ी है। इसके अलावा सरकार ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित बेदखली के नियमों का पालन नहीं किया- जैसे कि बेदखली से पहले न्यूनतम अवधि की उचित नोटिस देना। लंबे समय से रह रहे लोगों को तत्काल हटाने की क्या जरूरत थी? इसके अतिरिक्त यदि अहमदाबाद के अंतर्गत आने वाले इस क्षेत्र का इतने वर्षों में पुनर्विकास नहीं किया जा सका तो मलिन बस्ती पुनर्वास नीति का क्या कार्य है? पहलगाम घटना के मद्देनजर हुई यह कार्रवाई इसे झुग्गी-झोपड़ी हटाने की गतिविधि से अधिक कुछ संकेत देने के लिए एक खतरनाक विध्वंस का रंग देती है। ऐसा लगता है कि यह उन क्षेत्रों को अपना निशाना बना रहा है जिसमें भारतीयों और आप्रवासियों को एक साथ रखा जाता है और सभी गरीबों के- चाहे वह भारतीय हो या नहीं, अधिकारों का सम्मान नहीं किया जाता है।

निश्चित रूप से बिना वैध दस्तावेजों के आव्रजन का मुद्दा एक वैध चिंता का विषय है पर इससे निपटना संवैधानिक मूल्यों और मानवीय गरिमा के साथ संरेखित होना चाहिए। इसमें गुजरात सरकार साफ तौर पर फेल हो गई है।

डॉ. रामअवतार किला जिनकी हर पात में सेवा एवं संवेदना की झंकार हैं

-: ललित गर्ग :-

आप एक सेतु बन सकते हैं, जीवन-मुस्कान का, जिन्दगी बचाने वाला एवं सेवा करने वाला पुल। हम एक साथ मिलकर जीवन को बचा सकते हैं, जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर कर सकते हैं, अंधेरों के बीच रोशनी बन सकते हैं। इसी सोच के साथ ह्यअक्षय सेवाह्ल के संयोजक डॉ. रामअवतार किला पिछले दो दशकों से जरूरतमंद मरीजों को परामर्श, दवा एवं ईलाज की सुविधाएं उपलब्ध कराने में सतत रूप से कार्यरत हैं। उनके नेतृत्व में चलाए जा रहे ह्यहॉस्पिटल फूड ड्राइवह्ल के अंतर्गत अप्रैल 2017 से दिल्ली के प्रमुख सरकारी अस्पतालों एम्स, सफदरजंग, राममनोहर लोहिया एवं 2023 से लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के बाहर प्रतिदिन लगभग 2500 लोगों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। डॉ. किला के नेतृत्व में गत आठ वर्षों में अब तक 70 लाख से अधिक लोगों को इस पहल के अंतर्गत भोजन वितरित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त, एम्स पावरग्रिड विश्राम सदन सहित देश के छह अन्य शहरों पटना, लखनऊ, झज्जर आदि में रोगियों एवं उनके परिजनों के लिए 2000 से अधिक बिस्तरों की विश्राम सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। ऋषिकेश में निमार्णाधीन ह्यमाधव सेवा विश्राम सदनह्ल, जिसमें 500 बिस्तरों की व्यवस्था होगी, जो जल्द ही जनसेवा के लिए समर्पित किया जाएगा। इस तरह डॉ. किला जिन्दगियों को बचाने वाले खूबसूरत पुलों का निर्माण करते हैं। उनकी जिन्दगी की हर पात में सेवा एवं परोपकार की झंकार सुनी जा सकती है।

समय की शिला पर मान, यश, सृजन-सेवा, निष्ठा-आस्था से भरी अनूठी कहानी हैं डॉ. रामअवतार किला की। प्रख्यात समाजसेवी,, गौसेवक, कर्मयोद्धा एवं जुझारू व्यक्तित्व के धनी डॉ. किला एक प्रसिद्ध चार्टर्ड एकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी एवं कॉर्पोरेट सलाहकार हैं, जिन्होंने अपने कैरियर में वित्तीय परामर्श और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है। मूल रूप से राजस्थान के चुरू जिले से ताल्लुक रखने वाले डॉ. किला वर्ष 1977 में उच्च अध्ययन एवं कैरियर निर्माण के उद्देश्य से दिल्ली आए। उन्होंने वर्ष 1982 में कंपनी सेक्रेटरी (सीएस) तथा 1983 में चार्टर्ड एकाउंटेंसी (सीए) की डिग्रियां प्राप्त की। वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में अपनी अद्वितीय व्यावसायिक दक्षता, ईमानदारी एवं दूरदर्शिता के बल पर डॉ. किला ने ह्यपरफेक्ट ग्रुपह्ल के माध्यम से कॉर्पोरेट परामर्श में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। वह वर्तमान में परफेक्ट ग्रुप के चेयरमैन हैं। इसके अतिरिक्त वे कई सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों के साथ सक्रिय भूमिका में जुड़े हुए हैं। वे समाज एवं परिवार के लिए एक प्रेरणा हैं, साहस के प्रतीक हैं, एक प्रकाश हैं और संवेदनाओं के पुंज सेवार्थी एवं परोपकारी व्यक्तित्व हैं। वक्त के अलग-अलग अवसरों पर इस दिव्य व्यक्तित्व की कहानी को सब कोई घटते हुए देख रहे हैं, एक इतिहास बनते हुए देख रहे हैं, एक सृजनात्मक जीवनगाथा को गुंथते हुए देख रहे हैं। डॉ. किला एक अनूठा एवं विलक्षण व्यक्तित्व है, जो उन्हें ठीक लगता है, वही करते हैं। वे बेचैन रहते हैं किसी के अभाव को देखकर। वे खिल उठते हैं किसी की मुस्कान को देखकर।

जैसे सूर्य की किरणें निर्ब्याज भाव से सभी को आलोकित करती है, ऊष्मा पहुंचाती है और चांद की किरणें सभी जगह फैलती है तथा सभी को अपने धवल-शीतल आगोश में सहलाती और तापमुक्त करती है, कुछ ऐसा ही व्यक्तित्व है डॉ. किला का।

उनके ज्ञान, सेवा और स्नेह की निर्ब्याज और सतत प्रवाहित स्रोतस्विनी में जिसे भी एक बार अवगाहन करने का सुयोग मिला, वह इस अनुभूति से कृतार्थता का अनुभव किए बिना नहीं रह सका। उनके सान्निध्य से आदमी अचानक तापमुक्त और ऊंचा अनुभव करने लगता हैं। डॉ. किला को देखकर ही मैंने जाना कि आदमी इतना बड़ा होकर भी इतना निरहंकारी, सादगीमय एवं सरल होता है। उन्होंने अपने कर्म क्षेत्र में अनेक नये आयाम गढ़े और वित्त के क्षेत्र को भी अनेक रचनात्मक दिशाएं दी हैं। गरीब एवं निर्धन वर्ग की सेवा में समर्पित डॉ. किला जैसे व्यक्तित्व विरल होते हैं, जिनकी सारस्वत साधना की सुरभि चतुर्दिक व्याप्त है तथा जिनकी यशोपताका सर्वत्र फैली हुई है।

मौजूदा संकट पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाना बहुत जरूरी

- पी सुधीर

पहलगाम हत्याओं और सीमा पार से पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी समूहों की व्यापक परिचालन योजनाओं के बारे में विस्तृत दस्तावेजीकरण की कमी से अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का मामला और कमजोर हो गया है। जबकि घरेलू आबादी पाकिस्तान के इरादों के बारे में आश्वस्त हो सकती है, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय राय को आश्वस्त करने के लिए कहीं अधिक कठोर साक्ष्य और पारदर्शिता की आवश्यकता होती है।

खून नहीं, बल्कि सिंदूर मेरी रगों में बह रहा है' - प्रधानमंत्री मोदी के ये शब्द ऑपरेशन सिंदूर के बाद के अभियान की शुरूआत करने की उनकी खास शैली को दशार्ते हैं। देश के सामने मौजूद गंभीर चुनौतियों के जवाब में वह या उनकी सरकार और कर भी क्या कर सकती थी। पारदर्शिता और आत्मनिरीक्षण इस सरकार की कभी खासियत नहीं रही। मोदी सरकार की विदेश नीति की रणनीति प्रधानमंत्री को केंद्रीय व्यक्ति के रूप में पेश करने पर बहुत ज्यादा निर्भर रही है, जो सुसंगत कूटनीति को आगे बढ़ाने के बजाय एक व्यक्तित्व पंथ को विकसित करने का एक स्पष्ट प्रयास है। प्रधानमंत्री के व्यक्तित्व को विदेश नीति के अगुआ के रूप में स्थापित करने से पारंपरिक कूटनीतिक ज्ञान को उलट दिया गया है, और स्थापित कूटनीतिक परंपराओं से स्पष्ट रूप से यह अलग होने का संकेत है।

ऐतिहासिक रूप से, भारत की विदेश नीति इसकी घरेलू नींव में निहित रही है- जिनमें शामिल हैं इसके जीवंत संसदीय लोकतंत्र का लचीलापन, धर्मनिरपेक्षता, संघवाद से प्रेरित विविधता में एकता, और सामाजिक और आर्थिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता। इन सिद्धांतों ने वह आधार बनाया जिसने राष्ट्रों के समुदाय में भारत की स्थिति को ऊंचा किया। समान नागरिकता पर आधारित विविधता में एकता भारतीय गणराज्य की एक परिभाषित पहचान रही है।

क्या लगातार फोन का यूज ब्रेन ट्यूमर का रिस्क बढ़ा सकता है ?

आज के दौर में मोबाइल फोन हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है.सुबह उठने से लेकर रात सोने तक हम घंटों फोन का इस्तेमाल करते हैं. लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इसका हमारे दिमाग पर क्या असर होता है? क्या लगातार मोबाइल फोन का इस्तेमाल ब्रेन ट्यूमर का खतरा बढ़ा सकता है? आइए एक्सपर्ट से जानते हैं मोबाइल फोन का इस्तेमाल हमारे ब्रेन को किस तरह से प्रभावित कर रहा है और कैसे इससे बचा जा सकता है.

मोबाइल फोन से ब्रेन ट्यूमर का रिस्क बढ़ने का जिक्र इसलिए किया जा रहा है कि हर साल 8 जून को विश्व ब्रेन ट्यूमर दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य लोगों को ब्रेन ट्यूमर जैसी गंभीर बीमारी के बारे में जागरूक करना है. ब्रेन ट्यूमर एक ऐसी स्थिति है जिसमें दिमाग की कोशिकाएं असामान्य रूप से बढ़ने लगती हैं और एक गांठ (ट्यूमर) बना लेती हैं. ये ट्यूमर दो तरह के हो सकते हैं. पहला सौम्य ये धीमी गति से बढ़ते हैं और कैंसरस नहीं होते. मैलिग्नेंट ये कैंसरस होते हैं और तेजी से फैलते हैं.

ब्रेन ट्यूमर के लक्षण

ब्रेन ट्यूमर के कुछ लक्षण होते हैं, जिससे पता चलता है कि ब्रेन में गांठ बन गया है. जैसे, सिरदर्द, उल्टी, दौरे, दृष्टि में धुंधलापन, याददाश्त में कमी और बोलने में कठिनाई शामिल हो सकते हैं.

मोबाइल फोन और ब्रेन ट्यूमर का संबंध

ऋइ पंत अस्पताल में न्यूरोलॉजी विभाग के पूर्व हेड डॉ. दलजीत सिंह बताते हैं कि मोबाइल फोन से निकलने वाली रेडिएशन, जिसे रेडियोफ्रीक्वेंसी (फऋ) विकिरण कहा जाता है, हमारे दिमाग के पास ही रिसीव और ट्रांसमिट होती है. इसलिए कुछ लोगों को चिंता होती है कि क्या यह रेडिएशन ब्रेन ट्यूमर का कारण बन सकता है? हालांकि, इसका कोई सीधा संबंध नहीं है. अंदाजा लगाया जा रहा है कि मोबाइल फोन से निकलने वाले रेडिएशन ब्रेन ट्यूमर के रिस्क को ट्रिगर कर सकता है.

रिसर्च क्या कहती है?

वैज्ञानिकों ने इस विषय पर कई वर्षों से शोध किया है. विश्व स्वास्थ्य संगठन (हल्ड) की एक एजेंसी, ने 2011 में मोबाइल फोन से निकलने वाली फऋ रेडिएशन को संभावित कैंसरकारी की श्रेणी में रखा था।

इसका मतलब है कि मोबाइल फोन और ब्रेन ट्यूमर के बीच कोई ह्लसंभावितह्ल संबंध हो सकता है, लेकिन पक्के सबूत नहीं हैं.कई रिसर्च में यह पाया गया है कि जो लोग बहुत ज्यादा समय तक (10 साल या उससे ज्यादा) मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते हैं।

राधा स्वामी सत्संग दिनोद शाखा भिवानी के सेवादारों ने लगाई मीठे पानी की छबील

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। राधा स्वामी सत्संग दिनोद शाखा के सेवादारों में भिवानी राधा स्वामी आश्रम के आगे राहगीरों की मीठे पानी की छवि लगाकर प्यास बुझाई 16 ड्रम नींबू के पानी लगा इस कार्यक्रम में छोटे बड़े बूढ़े सभी सेवादारों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और गर्मी की परवाह किए बिना राहगीरों को भाग भाग कर पाने के लाया इस अवसर पर जानकारी देते हुए सेवादार संदीप पंघाल ने जानकारी देते हुए बताया कि यह छबील हजूर कवर साहब जी महाराज के आशीर्वाद से हर रविवार को लगाई जाएगी इसमें सभी सेवादार पर चढ़कर अपना सर्व दान करते हैं और राहगीरों की प्यास बुझाते हैं लगभग 16 ड्रम पानी पिलाया गया है और इस कार्यक्रम में सफाई व्यवस्था का विशेष ध्यान रखते हुए स्टील के गिलास में पानी पिलाया जाता है इस अवसर पर पवन शर्मा, रामपाल, जसवंत, मांगेराम, उदयवीर, अतर सिंह, चेतराम, संतलाल, ईश्वर सिंह, लक्ष्य शर्मा, राजीव सरपंच नाथवास, संजय सैनी, राजेश सोनी, अभिजीत पंघाल, रीस रोड, गर्व दहिया, पूर्ण आदि सेवादार उपस्थित थे।

समस्त पंजाबी खत्री सभा अनिल काठपालिया को इनेलो का भिवानी शहर का अध्यक्ष चुनने पर जताया आभार

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। समस्त पंजाबी खत्री सभा ने अनिल कठपालिया को इनेलो का भिवानी शहर का अध्यक्ष नियुक्त करने पर सभा के पदाधिकारियों ने इनेलो सुप्रीमो चौ. अभय सिंह चौटाला का पंजाबी समाज की तरफ से आभार जताया है। समस्त पंजाबी खत्री सभा के राष्ट्रीय विस्तार सुरेश अरोड़ा ने कहा कि बड़े ही अच्छा-खासा संख्या बल होने के बावजूद भी आज तक पंजाबी समाज को वो राजनीतिक तवज्जो नहीं मिली, जिसके वो हकदार है। लेकिन इनेलो ने हमेशा पंजाबी समाज को सम्मान की दृष्टि से देखा तथा पंजाबी समाज के कार्यकताओं की पार्टी निष्ठा को देखते हुए उन्हे पद सौंपे तथा इनेलो ने भिवानी के साथ-साथ पूरे हरियाणा मे पंजाबी समाज के नेताओ को उच्च पदों पर नवाजा। जिसके लिए वे उनका आभार जताते है। अरोड़ा ने कहा कि देश के इतिहास में पंजाबी समाज ने हमेशा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए अपना सर्वस्व तक न्यौछावर किया है। यही नहीं बटवारे के समय भी पंजाबी समाज के करीबन दस लाख लोगों की कुबार्नी देना धर्म परिवर्तन की बजाए उचित समाझा था, लेकिन राजनीतिक पार्टियों के लोग पंजाबी समाज के उस बलिदान को याद नहीं रखते। अरोड़ा ने कहा कि साथ ही राजनीतिक पार्टियों को यह बात भी समझनी चाहिए कि जिस भी पार्टी ने पंजाबी समाज के खिलाफ गलत टिप्पणी या भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया है, उसने अपनी सत्ता ही खोने का काम किया है।

बदलाव वेलफेयर सोसाइटी ने राहगीरों को गर्मी से राहत देने के लिए लगाई ठंडी लस्सी की छबील

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। भीषण गर्मी में लोगों को राहत देने के उद्देश्य से बदलाव वेलफेयर सोसाइटी द्वारा स्थानीय चौ. बंसीलाल पार्क के सामने में ठंडी लस्सी की छब्बील लगाई गई। संस्था के सदस्यों ने राहगीरों, दुपहिया वाहन चालकों और मजदूरी करने वाले लोगों को ठंडी मीठी लस्सी वितरित की। इस मौके पर बदलाव वेफलेयर सोसायटी के प्रधान श्यामपाल ने कहा कि इस सेवा अभियान का उद्देश्य ना केवल लोगों को गर्मी से राहत पहुंचाना था, बल्कि सामाजिक सद्भाव और सेवा भावना को भी प्रोत्साहित करना था। उन्होंने कहा कि जनसेवा ही बदलाव वेलफेयर सोसाइटी का मुख्य उद्देश्य है, तथा सनातन संस्कृति में किसी प्यासे को पानी पिलाना बड़े ही पुण्य का कार्य माना जाता है तथा सनातन संस्कृति की राह पर चलते हुए बदलाव वेलफेयर सोसाइटी द्वारा गर्मी के मौसम में समय-समय पर ठंडे पानी, जलजीरा की छबील लगाई जाती है। इसी क्रम में ठंडी लस्सी की छबील लगाकर राहगीरों को गर्मी से राहत पहुंचाने का प्रयास किया गया।

उन्होंने कहा कि जनसेवा की दिशा में इस तरह के आयोजन समाज के लिए प्रेरणादायक होते हैं और युवाओं को भी जनसेवा के लिए प्रोत्साहित करते हैं। छबील में स्थानीय लोगों ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया और बदलाव वेलफेयर सोसाइटी के इस कार्य की सराहना की। संस्था ने भविष्य में भी इसी प्रकार के सामाजिक कार्यों को जारी रखने का संकल्प लिया। इस अवसर पर पेलूराम, चेतन, राहुल, विशाल, गंजा, सूरज सहित अन्य नागरिक मौजूद रहे।

घर के बाहर से बाइक चोरी

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। शहर के डी-ब्लॉक क्षेत्र में एक मकान के बाहर से चोर बाइक चोरी कर ले गए।

पुलिस को दी शिकायत में दीपक गांधी ने बताया कि बीती 6 जून की दोपहर को उसने अपने घर के बाहर बाइक खड़ी की थी। कुछ समय बाद संभाला तो बाइक गायब मिली। उसने अपने स्तर पर आसपास के लोगों से भी पूछताछ की, लेकिन बाइक का कोई सुराग नहीं लगा। इसके बाद उसने पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्जकर आगामी कार्रवाई शुरू की है।

आटा चक्की से नकदी भरा गुल्लक चुराया

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। गांव फरवाई कलां में चोरों ने एक आटा चक्की से नगदी भरा गुल्लक चोरी कर लिया। गुल्लक में करीब 4500 रुपए की नगदी थी।

पुलिस को दी शिकायत में गांव निवासी राजकुमार ने बताया कि वह आटा चक्की चलाता है। उसने बताया कि बीती 8 जून की रात्रि को वह खाना खाकर सो गया। देर रात को चोरों ने आटा चक्की के कमरे का ताला तोडकर गुल्लक चोरी कर लिया। सुबह उसे घटना का पता चला। उसने अपने स्तर पर आसपास के लोगों से भी पूछताछ की, लेकिन गुल्लक का कोई सुराग नहीं लगा। इसके बाद उसने पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्जकर आगामी कार्रवाई शुरू की है।

इस साल के अंत तक बदल जाएगी क्षेत्र की तस्वीर : मंत्री गंगवा

कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने आदमपुर के निर्माण कार्यों को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करने के दिए निर्देश

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 09 जून। कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा है कि इस साल के अंत तक आदमपुर में अमृत योजना के तहत चल रहे कार्यों को पूरा कर लिया जाएगा, जिससे आदमपुर की सूरत बदल जाएगी। यहां शहरी तर्ज पर सभी सुविधाएं उपलब्ध हो जाएगी।

सोमवार को संबंधित विभागों के अधिकारियों की बैठक लेने के गंगवा ने यह बात कही। बैठक में सीवरेज और पेयजल कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने के निर्देश दिए, साथ ही कहा कि जहां पर कार्यों को लेकर जनशिकायते आई हैं उन्हें दूर किया जाए। कैबिनेट मंत्री ने बताया कि पीडब्ल्यूडी विभाग तथा मार्केटिंग कमेटी के कार्य शुरू हो चुके हैं। एचएसवीपी के तहत होने वाले कार्यों का टेंडर हो गया है। विकास कार्यों के मद्देनजर जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को निर्देश दे दिए गए हैं कि वह पहले पाइपलाइन बिछाने का कार्य पूर्ण कर लें ताकि उसके उपरांत अन्य कार्य सुगमता से किया जा सके। लोक निर्माण विभाग एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक में आदमपुर क्षेत्र में चल रहे विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी निर्माण कार्यों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्वक पूरा किया जाए ताकि आमजन को समय पर सुविधाएं मिल सकें।

कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि सरकार विकास कार्यों को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध है और कोई भी लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। उन्होंने अधूरी परियोजनाओं की सूची लेकर संबंधित अधिकारियों से उनका स्टेटस जाना और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जो कार्य समय पर पूरे नहीं होंगे, उनके लिए जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी।

बैठक के उपरांत कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने मौके पर उपस्थित आमजन की समस्याएं भी सुनीं। कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि सरकार जनसेवा के संकल्प के साथ काम कर रही है और प्रत्येक नागरिक को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। क्षेत्र के लोगों ने पेयजल आपूर्ति, सडकों की मरम्मत, जल निकासी और अन्य स्थानीय मुद्दों को लेकर अपनी बात रखी। कैबिनेट मंत्री रणबीर सिंह गंगवा ने बताया कि महाग्राम योजना के तहत पूरे प्रदेश के 148 गांव को चयनित किया गया था इनमें से 16 गांव में कार्य पूरा हो चुका है और 30 गांव में कार्य चल रहा है। प्रत्येक गांव में 50 से 70 करोड़ रुपए की लागत से विकास कार्य करवाए जा रहे हैं, ताकि गांवों में शहरी तर्ज पर सभी सुविधाएं मुहैया हो सके। सभी गांव की फिरनी पक्की करवाई जा रही है और वहां लाइटों की व्यवस्था की गई है। साथ ही वहां सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट जैसे बड़े कार्य भी किए जा रहे हैं।

लक्ष्य पब्लिक स्कूल में हैंडबॉल लीग चैंपियनशिप आयोजित

पंजाब टीम ने लहराया परचम, मुख्य अतिथि ने खिलाड़ियों को दिया नशामुक्त जीवन का दिया संदेश

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 09 जून। हिसार से सटे गांव धान्सू स्थित लक्ष्य पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय 7-7 हैंडबॉल लीग चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न राज्यों से आई टीमों ने हिस्सा लेते हुए खेल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में पंजाब की टीम ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के दम पर खिताब पर कब्जा जमाया।

इस प्रतियोगिता का उद्घाटन लक्ष्य ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के निदेशक रामनिवास वर्मा द्वारा किया गया, जिन्होंने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि खेल न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक विकास के लिए भी आवश्यक हैं। ऐसे आयोजनों से छात्रों में नेतृत्व, टीम वर्क और अनुशासन जैसे गुण विकसित होते हैं। समापन समारोह के मुख्य अतिथि संजीव वर्मा सुपुत्र मंत्री

रणवीर गंगवा ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। और सरकार द्वारा खिलाड़ियों को दी जाने वाली सुविधाओं से भी अवगत करवाया। गांव धान्सू के सरपंच सुरजीत सिंह वर्मा ने लक्से खेल एकेडमी को 2100 रुपए कि इनाम राशि देकर सम्मानित किया। उन्होंने अपने भाषण में खेल के महत्व पर प्रकाश डाला। विद्यालय के डायरेक्टर रामनिवास वर्मा ने बताया कि लक्ष्य पब्लिक स्कूल में समय-समय पर इस प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं जिनका उद्देश्य खिला खाडि़यों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास है कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को भी राष्ट्रीय स्तर और अंतरराष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। प्रतियोगिता की एक और विशेषता यह है कि इसमें खिलाड़ियों की बोली प्रक्रिया के माध्यम से चयन होता है, जिससे खिलाड़ियों को पहचान और प्रोत्साहन मिलता है। यह नवाचार खेलों के प्रति खिलाड़ियों में रुचि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। लक्ष्य खेल एकेडमी के एनआईएस कोच उमेश शर्मा ने बताया कि विद्यालय परिसर में नियमित रूप से विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जिनके माध्यम से छात्र न केवल राज्य और राष्ट्रीय स्तर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलते हैं, बल्कि अनेक छात्र खेल कोटे के माध्यम से सरकारी नौकरियों में भी चयनित हो रहे हैं। विद्यालय के चेयरमैन रमेश कुमार वर्मा ने कहा कि लक्ष्य पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी समान रूप से भागीदारी कर रहे हैं। इस अवसर पर समारोह में अनेक गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें ग्राम धान्सू के सरपंच सुरजीत सिंह, सियाराम कलेरी,जगबीर बुरा, सुरजीत पूनिया, सुरेंद्र सिंह दनौदा, सुनील कुमार शर्मा, राममेहर बूरा, सोहन लाल बूरा, विक्की, शिक्षा विभाग में कार्यरत संपूर्ण सहित अनेक शिक्षाविद, अभिभावकगण, ग्रामीण व युवा प्रतिभाएं मौजूद रहीं।

कांग्रेस पर्यवेक्षकों ने टटोली नब्ज : लाल बहादुर खोवाल।

-जिला प्रधान के लिए आब्जर्वरों ने दावेदारों से मांगे आवेदन

हरियाणा वाटिका/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 09 जून। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की पर्यवेक्षक व राजस्थान से विधायक रीटा चौधरी व प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पर्यवेक्षक लाल बहादुर खोवाल प्रदेश अध्यक्ष हरियाणा कांग्रेस लीगल डिपार्टमेंट तथा पूर्व मंत्री जगदीश यादव ने कांग्रेस नेताओं और कार्यकताओं से जिला प्रधान को लेकर स्थानीय लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह में मुलाकात कर मंत्रणा की।

लाल बहादुर खोवाल ने बताया कि केंद्रीय नेतृत्व संगठन को लेकर बेहद गंभीर है और इसके लिए प्रदेश भर में बैठकों का दौर जारी है जिला प्रधान के लिए आवेदन आमंत्रित करते हुए राहुल गांधी के निदेर्शानुसार संगठन में जातिगत समीकरणों का भी ध्यान रखा जाएगा और इसके मद्देनजर सामाजिक कार्यकताओं, खेल,

शिक्षा और डॉक्टर व्यवसाय से जुड़े लोगों से भी चर्चा की गई। इससे पहले रीटा चौधरी, लाल बहादुर खोवाल व जगदीश यादव अपने निर्धारित कार्यक्रम के मुताबिक रेस्ट हाउस पहुंचे जहां कांग्रेस कार्यकताओं ने उनका फूल मालाओं से अभिनंदन किया। मीटिंग हाल में पर्यवेक्षकों ने आए हुए नेताओं और कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हाल ही में विधानसभा चुनावों के परिणामों से सबक सीखते हुए अब संगठन को एकजुट होकर मजबूत करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पार्टी के जिला प्रधान के लिए 35 से 55 वर्ष की आयु के लोगों को अधिमान दिया जाएगा लेकिन उम्र की कोई बाध्यता नहीं है। वरिष्ठ नेताओं और कार्यकताओं की राय ली जाएगी और उसे प्राथमिकता दी जाएगी जो लंबे समय से पार्टी से जुड़े रहने के साथ धरातल से भी जुड़ा हो और जिसमें सभी लोगों को साथ लेकर चलने की क्षमता हो। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के ऑब्जर्वर लाल बहादुर खोवाल ने बताया कि दादरी जिले से 6 लोगों का पैनल बनाकर हाई कमान को भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके लिए दादरी के लोक निर्माण विभाग के विश्राम गृह में नेताओं और कार्यकताओं से सुबह साढ़े दस बजे से शाम चार बजे तक वन टू वन लगातार तीन दिन तक बातचीत की जाएगी। इस दौरान पूर्व सीपीएस रणसिंह मान, पूर्व विधायक धर्मपाल सांगवान, पूर्व विधायक सोमबीर सिंह श्योराण, पूर्व विधायक सोमबीर सांगवान,पूर्व विधायक कर्नल रघुबीर सिंह छिल्लर, पूर्व विधायक सुखविन्द्र मांढी, पूर्व विधायक नृपेन्द्र श्योराण,पूर्व विधायक नृपेन्द्र सांगवान, मनीषा सांगवान समेत सैकड़ों नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सांसद धर्मबीर सिंह और जय प्रकाश ने की विकास कार्यों की समीक्षा

मनरेगा के तहत छोटे किसानों के लिए काम के किए गए हैं विशेष प्रावधान: सांसद धर्मबीर सिंह

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। लघु सचिवालय स्थित डीआरडीए सभागार में सोमवार को जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता हिसार से सांसद जयप्रकाश और भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद धर्मबीर सिंह ने संयुक्त रूप से की। बैठक में निर्देश देते हुए सांसद धर्मबीर सिंह ने कहा कि सरकार द्वारा मनरेगा के तहत छोटे किसानों के लिए काम के विशेष प्रावधान किए गए हैं, जिसमें 266 कार्य शामिल हैं। मनरेगा को छोटे किसानों के साथ में जोड़ा जाए ताकि वे अपनी आमदनी बढ़ा सकें। उन्होंने कहा कि किसानों को मनरेगा के माध्यम से किए जाने वाले कार्यों की जानकारी भी दी जाए।

बैठक के दौरान नेशनल हाईवे, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, रेलवे, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, नेशनल हेल्थ मिशन, समग्र शिक्षा, महिला एवं बाल विकास विभाग, मिड डे मील, डिजिटल इंडिया, सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाएं, खनन कार्य,

पशुपालन योजनाएं, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, स्वच्छ भारत मिशन शहरी, प्रधानमंत्री आवास योजना सहित अनेक योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। बैठक में जिला परिषद के सीईओ अजय चोपड़ा ने एजेंडा प्रस्तुत किया।

समीक्षा बैठक में सांसद धर्मबीर सिंह ने विशेषकर जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को निर्देश दिए कि विशेष कर जिले के उन गांवों के वाटर टैंकों को पानी से भरना सुनिश्चित करें जहां पर पेयजल की दिक्कत होती है। उन्होंने कहा कि नागरिकों के समक्ष पेयजल की समस्या नहीं बनी चाहिए। इसी प्रकार से उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन स्कूलों की बिल्डिंग बिल्कुल जर्जर हो चुकी है, उन स्कूल भवनों को कंडम किया जाए और नए स्कूल भवनों का निर्माण किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि स्कूलों में पेयजल और शौचालय का प्रबंध हो। इसके लिए सभी स्कूलों का सर्वे किया जाए।

उन्होंने बैंक अधिकारियों को निर्देश दिए की सरकार द्वारा पशुपालन के लिए ऋण सहायता प्रदान की जाती है लेकिन बैंकों द्वारा वह सहायता आसानी से नहीं दी जाती। इससे पशुपालकों को या आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि पशुपालन के लिए ऋण लेने में नागरिकों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में भी जागरूक करें और इसके साथ ही पराली प्रबंधन के तरीके बताएं। उन्होंने नेशनल हाईवे और लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि सडकों का निर्माण निर्धारित पैरामीटर के अनुरूप किया जाएं। सडक व आस-पास में किसी भी तरह से अवैध निर्माण ना हो।

इसी प्रकार से सांसद धर्मबीर सिंह ने क्रीड के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे परिवार पहचान पत्र से संबंधित नागरिकों की समस्याओं का तुरंत समाधान करें। उन्होंने क्रीड के प्रबंधक को सप्ताह में एक बार प्रत्येक उपमंडल में बैठकर नागरिकों की परिवार पहचान पत्र से संबंधित दिक्कतों को दूर करने के निर्देश दिए। उन्होंने महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि आंगनबाड़ी केंद्रों में शौचालय तथा पेयजल का प्रबंध हो।

इस मौके पर डीसी महावीर कौशिक, एडीसी डॉ. मुनीष नागपाल, एसडीएम भिवानी महेश कुमार, एसडीएम तोशाम अश्वीर नैन, एसडीएम लोहारू मनोज दलाल और एसडीएम सिवानी विजया मलिक, डीएमसी गुलजार मलिक, सिविल सर्जन रघुवीर शांडिल्य सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

डीसी महावीर कौशिक ने एक पेड़-माँ के नाम अभियान के द्वितीय चरण के लिए अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। डीसी महावीर कौशिक ने विभिन्न विभागों के अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिए कि वे एक पेड़-माँ के नाम अभियान के द्वितीय चरण में पौधारोपण के लिए वन विभाग के पास शीघ्र डिमांड भेजें। डिमांड के अनुरूप विभागों को पौधे वितरित किए जाएंगे। वन विभाग द्वारा पर्याप्त संख्या में पौधे तैयार किए गए हैं। सरकार के निदेर्शानुसार जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में व्यापक स्तर पर पौधरोपण अभियान शुरू किया जाएगा।

डीसी श्री कौशिक सोमवार को वीसी रूम में एक पेड़-माँ के नाम अभियान के द्वितीय चरण में किए जाने वाले पौधारोपण को लेकर अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे रहे थे। इस दौरान उन्होंने विशेषकर शिक्षा विभाग, परिवहन विभाग, खेल विभाग, स्वास्थ्य विभाग, विकास एवं पंचायत विभाग, बागवानी विभाग, सिंचाई विभाग, कृषि विभाग, पुलिस विभाग, लोक निर्माण विभाग और शहरी स्थानीय निकाय विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे उनके कार्यालय परिसर और उनके अधिकार क्षेत्र में आने वाली उपयुक्त जगहों पर पौधा रोपण के लिए डिमांड वन विभाग के पास भिजवाएं।

उन्होंने निर्देश दिए कि जगह के अनुरूप ही पौधों की डिमांड भेजी जाएं। डीसी ने कहा कि एक पेड़-माँ के नाम अभियान के द्वितीय चरण में लगाए जाने वाले पौधों की जीओ टैगिंग की जाएगी। पौधारोपण के साथ उनका संरक्षण करना भी जरूरी है। उन्होंने बताया कि सरकार के निदेर्शानुसार मनरेगा, जलशक्ति अभियान, स्वच्छ भारत मिशन, नेशनल ग्रीन हाइवे मिशन, स्कूलों में इको क्लब आदि के तहत भी पौधा रोपण किया जाता है।

इस दौरान डीएफओ डॉ. राजेश वत्स ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला में वन विभाग द्वारा तीन लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। इनमें से करीब एक लाख 65 हजार पौधे किसानों को खेतों में लगाने के लिए दिए जाएंगे, जिनमें क्लोन का सफेदे होंगे। जिला में लड़कियों के स्कूलों के लिए विशेष तौर पर सहजन के पौधे दिए जाएंगे, जिनके पत्तों और फलियों में प्रोटीन की भरपूर मात्रा होती है। वन विभाग द्वारा जिला में पौधारोपण को लेकर कार्य योजना तैयार की जा रही हैं, जिसके चलते नर्सरी में पौधे तैयार किया जा रहे हैं। वन विभाग द्वारा जल शक्ति अभियान के तहत किसानों, आमजन और सामाजिक संस्थाओं को भी पौधे वितरित किए जाएंगे।

इस दौरान यातायात प्रबंधक भरत परमार, डीएसओ सतेंद्र कुमार, कॉलेज प्राचार्या त्रिलोक चंद सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

मकान में घुसकर चोरी के मामले में आरोपित पकड़ा, रिमांड पर लिया

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

महेंद्रगढ़, 09 जून। मकान में घुसकर नकदी व मोबाइल चोरी के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर महेंद्रगढ़ की पुलिस टीम ने एक आरोपित अजय वासी मौहल्ला माईचान महेंद्रगढ़ को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित को शहर महेंद्रगढ़ क्षेत्र से गिरफ्तार किया और न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया। पुलिस ने जांच में पता लगाया आरोपित नशे का आदी है और आरोपित के खिलाफ पहले भी काफी चोरी के मामले दर्ज हैं। पुलिस द्वारा आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

शिकायतकर्ता जलबीर वासी झोझू खुर्द, चरखी दादरी हाल आबाद देवीलाल कॉलोनी महेन्द्रगढ़ ने थाना शहर महेंद्रगढ़ में शिकायत दर्ज कराई कि वह तहसील सतनाली मे बतौर स्टाम्प विक्रेता का कार्य करता है। रात करीब 12.40 से 1.30 बजे उसके मकान मे घुसकर व नशीली चीज सुघाकर मकान से मेरा स्टाम्प विक्रेता का थैला, जिसमें करीब एक लाख अससी हजार रुपए व मोबाइल फोन चोरी हो गए। रात्रि 1.40 बजे मकान मालिक की पत्नी ने अवगत कराया। थैले घर से बाहर मिले जिसको चैक करने पर नकदी व फोन गुम पाया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।

युवक चोरीशुदा बाइक सहित काबू

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। जिला की राइडर नंबर 11 पर तैनात पुलिस कर्मियों ने गश्त व चेकिंग के दौरान नजदीक पेट्रोल पंप हिसार रोड़ सिरसा क्षेत्र से एक नौजवान युवक को बुटेल बाइक सहित पकड़ा है।

इंस्पेक्टर राधेश्याम ने बताया कि बीते दिन राइडर नंबर 11 पर तैनात पुलिस कर्मी गश्त के दौरान पेट्रोल पंप हिसार रोड़ सिरसा की तरफ जा रहे थे। इस दौरान पुलिस जवानों को पेट्रोल पंप के नजदीक क्लासिक बुलेट बाइक के पास एक नौजवान युवक खड़ा दिखाई दिया। उन्होंने बताया कि पुलिस जवानों ने शक के आधार पर उक्त बाइक सवार युवक को बाइक के कागजात दिखाने के लिए कहा तो उक्त बाइक सवार युवक कागजात पेश नही कर पाया और न ही कोई संतोषजनक जबाव दे पाया। पुलिस जवानों ने अपने स्तर पर बाइक का इंजन व चैसिज नंबर चैक किया तो उत्तरप्रदेश से रजिस्टर्ड होना पाया गया था। बुलेट बाइक के असल मालिक से संपर्क किया तो उसने बताया कि वर्ष 2023 में दिल्ली के मुखर्जी नगर थाना में बाइक चोरी का मामला दर्ज करवाया हुआ है। थाना प्रभारी ने बताया कि सहदेव निवासी गांव मोहम्मदपुरिया, जिला सिरसा के खिलाफ चोरी की संपति रखने के संबंध में सिविल लाइन थाना में मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई है।

हरियाणा वाटिका
Email- haryanavatika@gmail.com

पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के मुख्य केंद्रीय प्रभारी ने घर-घर जाकर दिया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का निमंत्रण

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 09 जून। पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के तत्वावधान में जिला कुरुक्षेत्र के विभिन्न तहसीलों के गांवों में योग शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। पीठ के मुख्य केंद्रीय प्रभारी राकेश भारत के मार्गदर्शन में, हरियाणा राज्य प्रभारी ईश आर्य व जिला प्रभारी पाला राम ने प्रातः अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जो कि 21 जून को ब्रह्मसरोवर पर आयोजित होने जा रहा है, उसके प्रचार हेतु कुरुक्षेत्र में घर-घर जाकर उस क्षेत्र के निवासियों को आमंत्रित किया व उनका आह्वान किया कि वे इस अवसर पर आकर स्वामी रामदेव के मार्गदर्शन में योग का अभ्यास करें और अपने आसपास जो भी योग कक्षा चल रही है उसमें नियमित रूप से जाकर स्वयं को स्वस्थ रखें क्योंकि स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ एवं समृद्ध समाज का निर्माण कर सकता है। पाला राम ने तहसील थानेसर के गांव में बच्चों को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रोटोकॉल का अभ्यास करवाया। गांवों में प्रचार हेतु रैली भी निकाली व ग्राम निवासियों को योग दिवस के अवसर पर ब्रह्मसरोवर पर आने का आमंत्रण भी दिया। हरियाणा योग आयोग के सदस्य जयपाल शास्त्री के मार्गदर्शन में शाहाबाद के गांव डीग व छपरा में भाई टीका राम भारद्वाज द्वारा योग शिविर का संचालन किया गया। ग्राम निवासियों को प्रचार सामग्री वितरित की और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर क्यूआर कोड को स्कैन कर अपना पंजीकरण करने के लिए प्रेरित किया। लाडवा के मुराद नगर में भाई ओम सिंह, संजीव शर्मा और वीरपाल सिंह ने भी योग शिविर आयोजित किया व उपस्थित साधकों को योग दिवस में आने के लिए प्रेरित कर उनका पंजीकरण किया।

मृदा एवं जल परीक्षण से किसानों को भूमि के पोषक तत्वों की मात्रा की मिलती है पूर्ण जानकारी

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 09 जून। वरिष्ठ समन्वयक डॉ. बलजीत सिंह सहारण ने कहा कि मृदा एवं जल परीक्षण के बाद कृषि करने से किसानों को बहुत अधिक लाभ हो रहा है। मृदा परीक्षण से किसानों को अपनी भूमि के अंदर के सभी पोषक तत्वों की मात्रा की जानकारी होने के बाद उन्हें पूरा करना आसान है। जो कम खर्च पर फसल का उत्पादन बढ़ाने में सहयोगी बन रही है। डॉ. सहारण ने बताया कि किसानों का बढ़ता सहयोग और उत्साह इस अभियान की सफलता का प्रमाण है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के तत्वावधान में 29 मई से विकसित भारत संकल्प अभियान-2025 चलाया गया है। कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) कुरुक्षेत्र की दो टीमों ने बाबैन खंड के छह गांव भगवानपुर, मचेरी, कसीथल, धनानी, इशरहेड़ी और बीर कलवा में जागरूकता अभियान चलाया। वरिष्ठ समन्वयक डॉ. बलजीत सिंह सहारण के मार्गदर्शन में चल रहे इस अभियान में किसानों को धान की सीधी बिजाई, मृदा एवं जल परीक्षण, मशरूम उत्पादन, पोषण वाटिका की स्थापना, मौसम आधारित कृषि जानकारी आदि विषयों पर प्रशिक्षित किया गया। केवीके की दो टीमों का नेतृत्व फसल वैज्ञानिक डॉ. सरिता और मृदा विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. कविता ने किया। अन्य विशेषज्ञों में वानिकी वैज्ञानिक डॉ. एमके सिंह, पादप रोग विज्ञानी डॉ. फतेह सिंह, गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. ललिता और मौसम विज्ञानी डॉ. ममता भी किसानों के मार्गदर्शन में सक्रिय हैं। अभियान में किसानों को भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के वैज्ञानिकों ने जौ की उपयोगिता और बीज पंजीकरण पोर्टल की जानकारी दी। एनडीआरआई के वैज्ञानिकों ने कृत्रिम गभार्धान के लाभ बताए। पशु चिकित्सकीय टीम ने पशु क्रेडिट कार्ड योजना और बागवानी विभाग के अधिकारियों ने सब्सिडी योजनाओं की जानकारी दी। किसानों ने मिट्टी परीक्षण, जल संरक्षण और वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों पर गहन चर्चा की और वैज्ञानिकों का आभार व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए आवश्यक सामान के लिए निविदाएं आमंत्रित

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। जिला आयुर्वेद अधिकारी कार्यालय द्वारा 21 जून को स्थानीय भीम खेल परिसर में आयोजित होने वाला 11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए वस्तुओं व सेवाओं के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं।

जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. रश्मि शर्मा ने बताया कि योग दिवस के आयोजन हेतु कारपेट, कालीन, टेबल, गद्दे, सफेद चद्दर, हरे मैट स्टेज बनाना, बैकड्राप की व्यवस्था, फूल माला, फूल पत्ती, बुक्के व स्टेज सजावट का सामान, जलपान हेतु बिस्कुट, पानी की बोतल, फलेवर्ड मिल्क /फ्रूट जूस, प्रिटिंग फ्लेक्स, बैनर योग स्लोगन प्लेट, एलईडी स्क्रीन साइज, साउंड सिस्टम (इंटरनेट डाटा, माइक, लाइव स्ट्रीमिंग एवं फोटोग्राफी / वीडियोग्राफी की व्यवस्था सहित) व टी-शर्ट प्रिंटिड लोगो व बैक साइड प्रिंटिड थीम सहित आदि के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं। उन्होंने बताया कि इच्छुक फर्म अलग-अलग निविदा/कोटेशन सील बंद लिफाफे में स्थानीय सिविल अस्पताल स्थित आयुष विंग स्थित जिला आयुर्वेद अधिकारी कार्यालय भिवानी के नाम 12 जून 2025 को सांय 05 बजे तक जमा करवाएं। निविदाएं / कोटेशन गठित कमेटी सदस्यों की उपस्थिति में 1& जून को दोपहर 12.&0 बजे लघु सचिवालय स्थित नगराधीश कार्यालय में निविदाएं खोली जाएंगी आवश्यकतानुसार वस्तुओं की मात्रा वर्क आर्डर में बता दी जाएगी।

छात्रा से मोबाइल छीना-झपटी का आरोपी गिरफ्तार

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। सदर थाना पुलिस ने महत्वपूर्ण सूराग जुटाते हुए गांव सिकंदरपुर क्षेत्र से एक छात्रा से मोबाइल छीना झपटी की वारदात में संलिप्त एक युवक को गिरफ्तार किया है।

सब इंस्पेक्टर सुखदेव सिंह सिंह ने बताया की सिकंदरपुर निवासी प्रिया ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह महिला पॉलीटेक्निकल कॉलेज में पढ़ती है। बीती 3 मई को जब वह कॉलेज से अपने घर सिकंदपुर जा रही थी। इस दौरान गांव के नजदीक पंहुची तो पीछे से बाइक पर सवार दो युवक आए और पीछे बैठे युवक ने मेरे हाथ से मोबाइल छीन कर मौका से फरार हो गए।

साहित्यकार मित्र मंडली द्वारा किया गया सिंदूर वंदन कवि सम्मेलन का आयोजन

- सुप्रसिद्ध कवियों ने अपनी रचनाओं से भारतीय सेना के शौर्य का किया वंदन- विधायक घनश्याम सर्राफ ने की मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत, डीसी महावीर कौशिक ने भी बिना साज-बाज से सुनाई रागनी की चंद लाइनें

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। महान स्वतंत्रता सेनानी पंडित नेकीराम शर्मा की पुण्यतिथि के अवसर पर रविवार देर रात स्थानीय पंचायत भवन में जिला प्रशासन के तत्वावधान में साहित्यकार मित्र मंडली, भिवानी द्वारा सिंदूर वंदन कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादी हमले का करारा जवाब देने वाली भारतीय सेना के शौर्य को समर्पित रहा। सुप्रसिद्ध कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय सेना को नमन किया और पाकिस्तान को चेताया। भिवानी से विधायक घनश्याम सर्राफ मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए तथा अध्यक्षता डीसी महावीर कौशिक ने की। एसपी मनबीर सिंह ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कवि सम्मेलन का संचालन वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार डॉ. रमाकांत शर्मा ने किया।

साहित्यकार मित्र मंडली के अध्यक्ष एवं जाने माने चिकित्सक और कवि डॉ. शिव कांत शर्मा ने सभी अतिथियों और कवियों का स्वागत किया। कवि सम्मेलन में कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से सेना को नमन करने के साथ साथ हास्य और प्रेम रस की कविताओं से श्रोताओं को गुदगुदाने का भी काम किया। वयोवृद्ध कवि बिजेंद्र गाफिल ने अपनी कविता की लाईने कुछ इस प्रकार पढ़ी कि अश्क को झिंझोडकर तो देखा जाए, आईने तो तोडकर तो देखा जाए- तो क्या मेरा भगवान मुझसे खुश हुआ- नारियल को फोडकर तो देखा जाए। चिकित्सक एवं कवि डॉ. शिव कांत शर्मा ने हास्य रस से भरी अपनी रचना सुनाई कि ठाढा मारै रोण ना दे, तू के कर ले मैं के कर लूं, बरसे कोन्या काल गेर दे, के बरसे यो रोज झमाझम, बीज बाजरा बोण ना दे, तू के करले

मैं के करलूं, खाट म्है खटमल कान में माछर, रोंदू टिंगर सासू खूसट, ना सोवे और सोण ना दे, तू के करले, मैं के कर लूं, के द्वारा सभी को गुदगुदाने का काम किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सहित्यकार डॉ. रमाकांत शर्मा ने अपनी कविता के माध्यम से सिंदूर ऑप्रेशन का वंदन किया और अपनी कविता प्रस्तुत इस प्रकार की, समझाया समझा नहीं था घमंड में चूर, सेना ने समझा दिया क्या होता सिंदूर। घर में घुसकर मारती- करती है संग्राम, मेरे भारत वर्ष की सेना तुझे प्रणाम। पुष्पलता पुष्पा ने पाकिस्तान को चेताने वाली कविता सुनाई कि अपनी करनी पर पछताएगा, जो सिंदूर मिटाएगा मिट जाएगा। बकरे कब तक अपनी खैर मनाएंगे, हम भारत की जय जयकार लगाएंगे। इसी प्रकार से प्रो. श्याम वशिष्ठद्द ने कविता सुनाई कि कातिलों को आजमाना छोड़ दो, जिंदगी से मात खाना छोड़ दो, अपनी घर में रोशनी के वास्ते, दूसरे के घर जलाना छोड़ दो। वहीं उन्होंने प्रेम रस की लाईने प्रस्तुत करते हुए सुनाया कि तुझे ही याद करूं सुबह ओ शाम लिखा, मेरे नसीब में दिलचस्प ये काम लिखा, वो पेड़ बन गए हैं मंदिरों के दरवाजे, जिन पर कभी मैने तेरा नाम लिखा।

- कोई दिल से नहीं मिलता, किसी से दिल से नहीं मिलता

इसी प्रकार मथुरा से पधारे श्याम सुंदर अकींचन ने अपनी कविताओं की जोरदार प्रस्तुती दी। उन्होंने सुनाया कि बिना मधुमास गुलशन में अमूबन गुल नहीं खिलता, तेल बाती बिना हरगिज कभी दीपक नहीं जलता, बड़ी वितरीत रीति है अकींचन इस जमाने की, कोई दिल से नहीं मिलता, किसी से दिल से नहीं मिलता। रोहतक से पधारे विरेंद्र मधुर ने मानवता को समर्पित अपनी कविता की लाईने इस प्रकार पढ़ी कि न हिंदू न मुस्लमान हूं, ईश्वर की निशानी हूं, भागीरथ की तपस्या का शुद्ध गंगा का पानी हूं। उन्होंने अपनी कविताओं से जल संरक्षण का भी संदेश दिया।

हरियाणवी कवि वीएम बेचैन ने ठेठ हरियाणवी भाषा में अपनी कविता के माध्यम से मौजूदा समय में भागदौड़ की जिंदगी में तनाव मुक्त रहने का तरीका बताया और अपनी कविता पढ़ी कि जिंदगी की जुल्फां नै हंस के सुलझाया करो, खुश रहना चाहवो सो तो टेंशन ना उठाया करो, तकलीफ 25 प्रतिशत कम हो ज्यागी- बस बालकां गेली बालक हो ज्याया करो। इसी प्रकार से सुनीता करोथवाल ने नाना के गांव की याद पर सुंदर कविता प्रस्तुत की।

- बिना साज बाज के डीसी ने जमाया रंग

कवि सम्मेलन में अपना संदेश देने के दौरान डीसी महावीर कौशिक ने एक रागनी की चंद लाईने पेश की और उन्होंने बिना साज बाज के ही रंग जमाया। डीसी ने वर्तमान परिवेश पर आधारित एक रागनी की लाईनें इस प्रकार पढ़ी कि नकली दुनिया दो रंगी का झूठा बाजे बोल आड़े, जिंदा की कोए कद्र नहीं सै- मरे हुआ का मोल आड़े।

ईसाई समुदाय के खिलाफ बढ़ती हिंसा व अत्याचारों के खिलाफ उतरा राष्ट्रीय क्रिश्चियन मोर्चा

मौलिक अधिकारों के खिलाफ ईसाई समुदाय को किया जा रहा है प्रताड़ित : पास्टर सुनीता

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। देश में ईसाई समुदाय के खिलाफ बढ़ती हिंसा व अत्याचारों के खिलाफ तथा आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग को लेकर राष्ट्रीय क्रिश्चियन मोर्चा ने सोमवार को शहर में प्रदर्शन करते हुए भिवानी उपायुक्त के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम मांगपत्र सौंपा।

इस मौके पर राष्ट्रीय क्रिश्चियन मोर्चा की महिला विंग की प्रदेश अध्यक्ष पास्टर सुनीता व प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेंद्र भोला ने कहा कि ईसाई समुदाय ने देश में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा व सामाजिक कल्याण में अपनी अहम भूमिका निभाते हुए लंबे समय से योगदान दिया है। लेकिन इसके बावजूद भी इस समुदाय के विशेषकर अनुसूचित जाति से जुड़े लोगों के खिलाफ बढ़ती हिंसा व समुदाय व लोकतंत्र को परिभाषित करने वाली बहुलतावाद दोनों को खतरे में डाल रही है। उन्होंने कहा कि

देश की 140 करोड़ की आबादी में ईसाई समुदाय की संख्या 2.3 प्रतिशत है, जिन्होंने हमेशा देश में संविधान, देशभक्ति, बंधुत्व व समानता व स्वतंत्रता के मूल्यों को बनाए रखा। लेकिन इसके बावजूद भी कुछ लोग मौलिक अधिकारों के खिलाफ जाकर इस समुदाय के लोगों को बेवजह प्रताड़ित करने का काम कर रहे है, जबकि मौलिक अधिकारों के विरोध में संसद को भी कानून बनाने का अधिकार नहीं है।

उन्होंने कहा कि यूनाईटेड क्रिश्चियन फोरम के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 में हिंसा और प्रताड?ा की 834 घटनाएं दर्ज गई, जो कि वर्ष 2023 में 734 से अधिक थी। उन्होंने आरोप लगाया कि ईसाई समुदाय के खिलाफ शत्रुता और हिंसा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्र के असहिष्णु दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी संगठन रहे है।

मांगपत्र के माध्यम से उन्होंने मांग की कि सभी हिंसा की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित कर आरोपियों को जवाबदेह ठहराया जाए, धार्मिक, स्वतंत्रता अधिनियमों की समीक्षा कर उनके दुरूपयोग पर रोक लगाई जाए, राज्य सरकारों को धार्मिक समाता और स्वतंत्रता को बनाए रखने के निर्देश दिए जाए, अनुसूचित जाति के ईसाई आरक्षण के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई में तेजी लाई जाए, जोखित में पडते. ईसाई समुदायों के लिए सुरक्षात्मक तंत्र को मजबूत किया जाए, अंतर धार्मिक संवाद को बढ़ावा देकर सांप्रदायिक सदभाव के लिए एक राष्ट्रीय मंच स्थापित किया जाए, शिकायत निवारण और संवाद के लिए एक आस्था आधारित राष्ट्रीय आयोग की स्थापना की जाए, अल्पसंख्यक सुरक्षा पर पुलिस और सरकारी अधिकारियों के लिए अधिकार आधारित प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाए। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि ईसाई समुदाय के खिलाफ हो रही हिंसा की घटनाओं पर रोक नहीं लगाई गई तो एक जुलाई को राष्ट्रीय क्रिश्चियन मोर्चा के राष्ट्रीय संयोजक व वामसेफ, भारत मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष वामन मेश्राम के नेतृत्व में भारत बंद के तहत प्रदर्शन किया जाएगा।

इस अवसर पर गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

संगठन में संघर्ष के साथी कार्यकताओं को दी जाए वरीयता : अंकित गुप्ता

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 08 जून। आल इंडिया लॉयर्स फौरम के प्रदेश महासचिव, कांग्रेसी नेता एवं वरिष्ठ अधिवक्ता अंकित गुप्ता ने कहा कि वे कितने ही ऐसे कार्यकताओं को जानते हैं जिन्होंने पार्टी का हर परिस्थिति में झंडा बुलंद रखा, जिन कार्यकताओं ने सालों से तन-मन-धन से पार्टी को मजबूत किया, उन्हें बार-बार अनदेखा किया जाता है। गुप्ता ने हरियाणा कांग्रेस में चल रही संगठनात्मक बैठकों को लेकर सवाल उठाए। संगठन में कार्यकताओं की अनदेखी के मुद्दे पर सवाल पर उन्होंने कहा, हरियाणा कांग्रेस में संगठनात्मक बैठकों का दौर बार-बार चलता रहता है। लेकिन अब ये बैठकें अक्सर एक औपचारिकता और दिखावा सा बनकर रह गई हैं। काबिलेगौर है कि एडवोकेट अंकित गुप्ता कांग्रेस पार्टी से थानेसर विधानसभा सीट के लिए 2019 और 2024 में सशक्त दावेदार रह चुके हैं। गुप्ता ने कहा जब टिकट और संगठन में जिम्मेदारी देने की बारी आती है, तो अक्सर दूसरी पार्टियों से आए लोगों को वरीयता दी जाती है और असली कार्यकताओं की मेहनत और संघर्ष को नजरअंदाज कर दिया जाता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी को अब अपनी पुरानी गलतियों को सुधारना चाहिए और उन कार्यकताओं को भी जिम्मेदारी देकर उनकी मेहनत का सम्मान करना चाहिए, जिन्होंने विपरीत परिस्थिति में पार्टी का झंडा बुलंद रखा। उन्होंने कहा, अगर कांग्रेस पार्टी को हरियाणा में फिर से मजबूत करना है, तो उसे अपने सच्चे कार्यकताओं की ताकत को पहचानना होगा और उन्हें उचित सम्मान और जिम्मेदारी देनी होगी।

नवीन जिन्दल फाउंडेशन द्वारा आयोजित शिविरों में लोगों ने लिया सुविधाओं का लाभ

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 08 जून। सांसद नवीन जिन्दल द्वारा कुरूक्षेत्र संसदीय क्षेत्र के लोगों के लिए नवीन संकल्प शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। थानेसर हल्के के दीदार नगर में पहुंच कर लोगों को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाया गया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गई। इन शिविरों में मोबाइल मेडिकल युनिटों में, एमबीबीएस डॉक्टरों द्वारा परामर्श और जांच के बाद निःशुल्क दवाइयां वितरित की जाती है। इस मौके पर रक्त और युरिन के टेस्ट भी किये जाते हैं साथ ही लोगों को आधार कार्ड, पैंशन और नवीन जिन्दल यशस्वी छात्रवृत्ति योजना के बारे में लोगों को लाभान्वित करने का प्रयास किया जाता है। सांसद नवीन जिन्दल के कार्यालय प्रभारी धर्मवीर सिंह ने बताया कि मोबाइल मेडिकल यूनिट द्वारा 62 मरीजों को परामर्श और जांच के बाद निःशुल्क दवाईयां, 16 लोगों के रक्त एवं युरिन के टेस्ट भी किए गए साथ ही 22 लोगों को अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है। उल्लेखनीय है कि सांसद नवीन जिन्दल की पहल पर नवीन जिन्दल फाउंडेशन द्वारा स्वस्थ कुरुक्षेत्र संसदीय क्षेत्र अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत लोगों को निःशुल्क दवाइयां, परामर्श और खान-पान से संबंधित स्वास्थ्यवर्धक आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसके साथ-साथ नवीन संकल्प शिविरों में सरकारी सुविधाओं का अधिक से अधिक लाभ कैसे लें और नवीन जिन्दल छात्रवृत्ति योजना लाभ कैसे उठाएं। यह तमाम तरह की जानकारियां इन शिविरों में दी जाती है। इस अवसर पर धनराज सिंह पार्षद, आकाश अग्रवाल, राजकुमार शक्ति केंद्र प्रमुख, वेद प्रकाश प्रजापत सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, संदीप कुमार, प्रदीप कुमार, सुखबीर रोहिल्ला, रिंकू, पंडित मोहन दास और बलबिन्दर सिंह मौजूद रहे।

तिगड़ाना के सैंकड़ों ग्रामीण पहुंचे लघु सचिवालय, उपायुक्त को सौंपा ज्ञापन

तिगड़ाना को हांसी में शामिल करने का विरोध जताकर भिवानी जिला मे शामिल रखने की उठाई मांग

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। जिला मुख्यालय से महज 4 किलोमीटर दूर स्थित तिगड़ाना गांव को हांसी जिले में शामिल किए जाने की प्रस्तावित योजना को लेकर तिगड़ाना के ग्रामीणों में खासा रोष है तथा वे इस योजना को रद्द कर गांव तिगड़ाना को हांसी की बजाए भिवानी जिला में ही शामिल रखे जाने की मांग उठा रहे है। इसी मांग को लेकर सोमवार को करीबन 1500 के करीबन ग्रामीण भिवानी के उपायुक्त कार्यालय पहुंचे तथा उपायुक्त को मांगपत्र सौंपकर तिगड़ाना को भिवानी जिला में ही शामिल रखे जाने की मांग जोर-शोर से उठाई

तिगड़ाना गांव ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान भिवानी के साथ जुड़ी

गांव तिगड़ाना निवासी एवं भाजपा नेता परमजीत सिंह मड्ढ व सरपंच सुरेंद्र कुमार ने बताया कि तिगड़ाना गांव की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान भिवानी जिले से जुड़ी हुई है, जिसे किसी भी हाल में तोडने

नहीं दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि तिगड़ाना गांव की भौगोलिक स्थिति, जनसुविधाएं और प्रशासनिक जरूरतें भिवानी से जुड़ी हुई हैं। गांववाले रोजमर्रा के कार्यो के लिए भिवानी पर निर्भर हैं, चाहे वह शिक्षा हो, स्वास्थ्य सेवाएं हों या कृषि संबंधी कार्य। ऐसे में 43 किलोमीटर दूर हांसी जिले में शामिल करने से आमजन को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

उन्होंने कहा कि गांव तिगड़ाना की जनसंख्या करीबन 25 हजार तथा मतदाता करीबन 11 हजार है । आज हुए प्रदर्शन में गांव तिगड़ाना के करीब 15 सौ लोग शामिल हुए।

जिला मुख्यालय से गांव की दूरी महज चार किलोमीटर

पूर्व सरपंच नेत्रपाल, प्रदीप ढाला, राजेश प्रधान, दीपा तंवर व अमित ने कहा कि गांव से जिला मुख्यालय भिवानी की दूरी मात्र 4 किलोमीटर होने से ग्रामीणों को अपने विभिन्न कार्यो के लिए भिवानी आने के लिए कम आर्थिक खर्च वहन करने के साथ वाहन भी आसानी से मिल जाते है। इससे उनके समय व रुपए दोनों की बचत है। लेकिन यदि तिगड़ाना को हांसी जिला में शामिल कर दिया गया तो ग्रामीणों को अधिक खर्च व समय लगेगा, जिससे उनकी आर्थिक परेशानियां बढ? के साथ-साथ रोजमर्रा के कार्य भी प्रभावित होंगे। जिसका ना कोई औचित्य नहीं बनता तथा यह तिगड़ाना के ग्रामीणों के हितों के भी विपरीत है। ऐसे में वे मांग करते है कि गांव तिगड़ाना को भिवानी जिला में रखा जाए।

बड़े स्तर पर होगा आंदोलन

कप्टेन रविंद्र, बीडीसी चेयरमैन सीताराम, नरेंद्र शर्मा, जिला पार्षद कृष्ण दहिया ने चेतावनी भी दी कि यदि प्रशासन ने उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया तो वे बड़े स्तर पर आंदोलन करने के लिए विवश होंगे तथा जरूरत पड़ी तो रोड़ जाम या अन्य राह अपनाकर अपनी बात सरकार तक पहुंचाएंगे। उपायुक्त ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि उनकी मांगों और भावनाओं को उच्च अधिकारियों तक पहुंचाया जाएगा और उचित निर्णय लिया जाएगा।

इस अवसर पर नेतराम, सुनील, अमित, रमेश सोनी, नरेंद्र पूर्व चेयरमैन, बोबी, राजू फौजी, नरेश पटवारी, रामबिलास शर्मा, कुशलपाल फौजी, प्रमोदी, नरेंद्र फौजी, भूप प्रधान, जितेंद्र तंवर, सोनू, रविंद्र, कमल प्रधान सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

11 जुआरी 8.15 लाख की जुआराशि सहित गिरफ्तार

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। शहर थाना पुलिस ने गश्त के दौरान महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्यवाही करते हुए पर दबिश देते हुए 11 लोगों को काबू कर उनके कब्जा से 8 लाख 15 हजार 300 रुपए की जुआराशि बरामद की है।

सब इंस्पेक्टर संदीप कुमार ने बताया कि थाना शहर सिरसा की एक पुलिस टीम गश्त के दौरान बाल्मिकी चौक क्षेत्र में मौजूद थी। इस दौरान पुलिस पार्टी को महत्वपूर्ण सूचना मिली की दीपक कुमार निवासी चंडीगढिया मौहल्ला अपने मकान में बैठाकर जुआ खिला रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस पार्टी ने उक्त मकान पर दबिश देकर 11 लोगों को काबू कर लिया। थाना प्रभारी ने बताया कि गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान मुरारी लाल निवासी गांव भोडिया खेड़ा, योगेश कुमार निवासी गली नंबर 5 कीर्ति नगर, अमित कुमार निवासी न्यू मॉडल टाउन हिसार, सचिन निवासी गांव काबरेल, सज्जन कुमार निवासी शमशाबाद पट्टी, कृष्ण कुमार निवासी कंबोज मोहल्ला, भूना, बुधराम निवासी गांव करनौली, पुरुषोतम कुमार निवासी गांधी कॉलोनी, संजय कुमार निवासी पटेल नगर टोहाना, जितेंद्र कुमार निवासी शांति नगर, हिसार व दीपक कुमार निवासी चंडीगढियां मोहल्ला को सार्वजनिक जगह पर सट्टा खाईवाली करते हुए 8 लाख 15 हजार 300 रुपए की सट्टाराशि के साथ काबू किया है।

महिला पुलिस ने वाहन चालकों को दी यातायात नियमों की जानकारी

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। महिला थाना की पुलिस टीमों ने शहर सिरसा के विभिन्न स्थानों पर नाकाबंदी कर आने जाने वाले वाहन चालकों को ट्रैफिक नियमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को ट्रैफिक नियमों की पालना करनी चाहिए। ट्रैफिक नियमों की अवहेलना कर दूसरों की जान जोखिम में नहीं डालनी चाहिए। महिला पुलिस की टीमों ने अभिभावकों से अपील करते हुए कहा कि अपने बच्चों को सडक सुरक्षा नियमों के बारे में जानकारी देनी चाहिए, क्योकिं दिन प्रतिदिन बच्चों से जुड़े सडक दुर्घटना के मामलें काफी बढ़ रहे हैं। महिला थाना की पुलिस टीमों ने बताया कि बच्चों द्वारा अक्सर पैदल पथ, साइकिल पर रास्ता पार करते या बस से उतरते समय ट्रैफिक नियमों की पालना न करने के चलते अक्सर सडक दुर्घटना के शिकार हो जाते है। पुलिस टीमों ने कहा कि दुपहिया वाहन चलाते समय हमेशा हेलमेट का प्रयोग करना चाहिए तथा वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा की सरकार द्वारा निर्धारित 18 साल से कम उम्र के बच्चों को वाहन चलाने के लिए न दें।

62 सफाई कर्मी किए निलंबित, एसडीएम ऑफिस के बाहर लगाया अनिश्चितकालीन धरना

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। डबवाली नगरपरिषद के 62 सफाई कर्मचारियों को ठेका प्रथा से हटाए जाने के बाद कर्मचारियों ने न्याय की मांग की है। कर्मचारियों ने मुख्यमंत्री, गृहमंत्री, उपायुक्त और नगरायुक्त को ज्ञापन सौंपा और एसडीएम दफ्तर के आगे अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ गए। कर्मचारियों ने सरकार और प्रशासन के खिलाफ खूब नारेबाजी की। उन्होंने कहा कि वे धरना जब तक खत्म नहीं करेंगे, जब तक उनकी मांगे मान नहीं ली जाती।

कर्मचारियों का किया ठेका रद्दः

हटाए गए कर्मचारियों ने बताया कि वे बीती मार्च 2024 से मार्च 2025 तक सेवाएं दे चुके थे। बीती 24 मार्च 2025 को एक साल का नया सफाई टेंडर हुआ, इसमें इन 62 महिला और पुरुष सफाईकर्मियों को पुनः नियुक्त किया गया था। उन्होंने बताया कि हटाए गए कर्मचारियों ने बीती 25 मार्च से 3 जून 2025 तक काम किया। कर्मचारियों का कहना है कि ठेकेदार ने उन्हें कम वेतन दिया और भुगतान में देरी की। इसके विरोध में उन्होंने बीती 17 मई को धरने की चेतावनी दी थी तथा उन्होंने बीती 23 मई को धरना लगाया।

कर्मचारियों को ठेकेदार ने दिया कम वेतनः

हटाए गए कर्मचारियों ने बताया कि ठेकेदार ने बीती 25 मार्च से 30 अप्रेल तक का वेतन 7200 रुपए प्रति माह की दर से दिया। यह राशि निर्धारित वेतन से कम थी। ठेकेदार ने बिना पूर्व सूचना के सभी कर्मचारियों का ठेका रद्द कर दिया। इससे कर्मचारी बेरोजगार हो गए हैं जिससे शहर की सफाई व्यवस्था भी प्रभावित हुई है।

सीधे पे रोल पर नियुक्ति दे सरकारः

कर्मचारियों की मुख्य मांग है कि सफाई व्यवस्था को ठेके पर न देकर सरकार सीधे पे-रोल पर नियुक्ति करे, साथ ही हटाए गए सभी 62 कर्मचारियों को डीसी रेट पर तुरंत बहाल किया जाए। कर्मचारियों ने चेतावनी दी है कि समाधान नहीं होने पर वे एसडीएम कार्यालय के बाहर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठेंगे। इस अवसर पर आरती, मनप्रीत कौर, ममता रानी, गुरदिता, सरोज, काला कुमार, किरण, सुनीता और बलजिंद्र सहित अन्य कर्मचारी मौजूद थे।

ट्रिनिटी सेवा फाउंडेशन द्वारा निर्जला एकादशी पर लस्सी व फल वितरण का आयोजन

हरियाणा वाटिका/प्रवीन कुमार

चंडीगढ़, 09 जून। ट्रिनिटी सेवा फाउंडेशन द्वारा पवित्र निर्जला एकादशी के शुभ अवसर पर सेक्टर-41 में लस्सी एवं ताजे फलों के वितरण का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर क्षेत्र के माननीय पार्षद श्री हरदीप सिंह जी ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा फाउंडेशन के सेवाभावी प्रयासों की सराहना की। इस आयोजन में क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यवसायी श्री राजकुमार यादव जी ने भी विशेष सहयोग प्रदान किया। उन्होंने लंगर व्यवस्था एवं फल वितरण में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए समाज सेवा में अपनी भागीदारी निभाई।

फाउंडेशन के सभी सदस्यों ने पूरे समर्पण और सेवा भावना के साथ कार्यक्रम को सफल बनाया। लस्सी और फल वितरण के माध्यम से गर्मी के मौसम में लोगों को राहत पहुंचाने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय रहा। ट्रिनिटी सेवा फाउंडेशन ने भविष्य में भी ऐसे जनसेवा कार्यक्रमों के आयोजन की प्रतिबद्धता जताई है।

ट्रिनिटी सेवा फाउंडेशन के अध्यक्ष रितेश भाटिया और उपाध्यक्ष ईश शर्मा, वरिष्ठ समन्वयक संतोष मैडम और रेखा मैडम, सलाहकार कृष्ण जी एवं सभी एनजीओ के सदस्य ने बढ़ चढ़ कर सेवा की ।

डीसी ने लिया ड्रेनों की सफाई व्यवस्था का जायजा, अधिकारियों को दिए निर्धारित समय में सफाई व्यवस्था पूरी करने के निर्देश

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। डीसी महावीर कौशिक ने सोमवार को सिंचाई विभाग के अधिकारियों को साथ लेकर जिले की विभिन्न ड्रेनों की सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मानसून की बारिश के चलते निर्धारित समय के दौरान ड्रेनों की सफाई व्यवस्था करें।

उल्लेखनीय है कि मानसून की बारिश के दौरान पानी की निकासी को लेकर मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने पिछले कुछ दिनों पहले प्रदेश के सभी उपायुक्तों को निर्देश दिए थे कि वे अपने-अपने जिलों में शहरी क्षेत्र में नालों और ड्रेनों की सफाई का कार्य करवाएं ताकि पानी की निर्बाध रूप से निकासी हो सके।

इसी के चलते उपायुक्त श्री कौशिक ने जिला के शहरी क्षेत्र में नालों को लेकर जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग और शहरी स्थानीय निकाय विभाग के अधिकारियों को तथा ड्रेनों की सफाई को लेकर सिंचाई विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए थे कि शहर में नालों तथा कृषि क्षेत्र में गांवों के आसपास ड्रेनों की सफाई का कार्य करवाया जाए। डीसी के आदेशानुसार ड्रेनों और नालों की सफाई का कार्य चल रहा है।

इसी कड़ी में सोमवार को डीसी ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को साथ लेकर तिगड़ाना मिताथल घुसकानी लिंक ड्रेन, धनाना मिताथल लिंक ड्रेन और मिताथल गुजरानी लिंक ड्रेन में सफाई व्यवस्था का जायजा लिया।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि निर्धारित समय के दौरान के अंदर ड्रेनों की सफाई का कार्य पूरा किया जाए। बारिश के दिनों में पानी की निकासी की समस्या नहीं बननी चाहिए। इस दौरान सिंचाई विभाग के संबंधित अधिकारी साथ में रहे।

टोल प्लाजा को स्थानांतरित करने पर उद्योग जगत ने केंद्र सरकार का जताया आभार

जतिन/राजा

गुरूग्राम, 09 जून। दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-48) पर गुरुग्राम स्थित खेडकी दौला टोल प्लाजा को मानेसर से आगे पंचगांव में स्थानांतरित करने के लिए केंद्र सरकार ने आधिकारिक रूप से मंजूरी दे दी है। केंद्र सरकार व केंद्रीय सडक, परिवहन व राजमार्ग मंत्री मंत्री नितिन गडकरी के इस निर्णय से करीबन 15 ?किमी तक की टोल- फ्री यात्रा की सुविधा मिलेगी तथा दिल्ली से मानेसर तक यात्रा भी सुगम होगी, जिससे हजारों ऑफिस-गोअर्स को विशेष राहत मिलेगी।

चौ. बंसीलाल नागरिक हस्पताल बचाओ संघर्ष समिति ने प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

चौ. बंसीलाल नागरिक हस्पताल की ओपीडी चालू करवाने व अन्य मांगों को लेकर किया प्रदर्शन

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। चौ. बंसीलाल नागरिक हस्पताल बचाओ संघर्ष समिति भिवानी ने स्थानीय चौ. बंसीलाल नागरिक हस्पताल में ओपीडी पुनः चालू करवाने, हस्पताल की जर्जर हुई चारों लिफ्टों की जगह नई लिफ्ट लगवाने व हालही में शुरू किए गए पंडित नेकीराम शर्मा मैडिकल कालेज में विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए विशिष्ट डाक्टरों व पैरा मैडिकल स्टाफ की भर्ती हेतु उपायुक्त कार्यालय के सामने सैंकड़ों नागरिकों को लेकर प्रदर्शन किया तथा मुख्यमंत्री के नाम मांपत्र सौंपा। मांगपत्र उपायुक्त की तरफ से एसडीएम भिवानी महेश कुमार ने लिया।

चौ. बंसीलाल नागरिक हस्पताल बचाओ संघर्ष समिति के संयोजक व कांग्रेसी नेता चौ. बंसीलाल के पोते अनिरुद्ध चौधरी, जनसंघर्ष समिति के संयोजक व सीपीआईएम के जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश व शहर के प्रमुख व्यापारी व कांग्रेसी नेता देवराज महता के नेतृत्व में सैंकड़ों लोगों ने उपायुक्त कार्यालय के सामने प्रदर्शन करके मुख्यमंत्री के नाम मांगपत्र सौंपा है। इससे पहले इस आंदोलन में शामिल सैंकड़ों नागरिक चौ. सुरेन्द्र सिंह पार्क में एकत्रित हुए तथा एक सभा की। जिसकी अध्यक्षता व्यापारी नेता देवराज महता ने की व मंच संचालन कामरेड ओम प्रकाश ने किया।

इस अवसर पर अनिरुद्ध चौधरी ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ने भिवानी में पंडित नेकीराम शर्मा मैडिकल कालेज में ना तो विभिन्न बीमारियों के इलाज हेतु विशिष्ट चिकित्सकों की भर्ती की ना ही उसका उचित तरीके से उद्घाटन किया, बल्कि आनन-फानन में चौ. बंसीलाल नागरिक हस्पताल बंद करने के उदेश्य से उसके सभी डाक्टरों को अनुचित तरीके से मैडिकल कालेज में

स्थांतरित कर दिया और हस्पताल की ओपीडी बंद कर दी। इससे भिवानी जिले व आसपास की जनता को कोई लाभ नहीं हुआ। अपितु उसकी इलाज संबन्धी समस्यायों को और ज्यादा बढ़ा दिया। उन्होंने कहा कि एक लंबे अरसे से हस्पताल की चारों लिफ्टें जर्जर व खराब पड़ी है। परिणामस्वरूप विभिन्न वार्डो में भर्ती मरीजों व उनके तामीरदारों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है तथा हस्पताल में बाथरूम व टायलटों में भारी गंदगी का आलम है, जिसकी हस्पताल प्रशासन कोई परवाह नहीं कर रहा है। उन्होंने भिवानी के चुने हुए जन प्रतिनिधियों द्वारा भिवानी शहर व लोगों की उपेक्षा करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सरकारी बीएड कालेज, जिसकी स्थापना चौ. बंसीलाल ने 1973 में की थी, उसे बिना कारण सीबीएलयू में मर्ज करने की योजना चल रही है, जो पढ? वाले विद्यार्थियों के हक में नहीं है। अब इस कालेज में पूरे कोर्स की फीस मात्र 34 हजार 500 रुपए है। बाद में इसे यूनिवर्सिटी में मर्ज करने के बाद, एक लाख रुपये से ज्यादा कर दी जाएगी। परिणाम स्वरूप गरीब घरों के छात्र छात्राएं पढ़ नहीं पाएंगे। नायब सैनी सरकार ने ,2015-16 की तरह इस निर्णय को वापिस लेना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जिले की जनता पानी बिजली व अन्य नागरिक सुविधाओं के लिए त्राहि त्राहि कर रही है, परन्तु भाजपा के जन प्रतिनिधि व जिला प्रशासन कुम्भकरणी नींद में मस्त है। गौरतलब है कि चौ. बंसीलाल नागरिक हस्पताल भिवानी के मुद्दे को लेकर पिछले एक महिने से जन संघर्ष समिति भिवानी के नेतृत्व में शहर के नागरिक आंदोलनरत हैं और इसकी समस्याओं के समाधान हेतु कई बार हस्पताल प्रशासन व मेडीकल कालेज प्रशासन के माध्यम से ाज्य की स्वास्थ्य मंत्री आरती राव, महिला बाल विकास एवं सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी व राज्य के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को ज्ञापन भेज चुके हैं। हस्पताल का ज्ञापन समिति की तरफ से तथा बीएड कालेज का ज्ञापन विकास मंच की तरफ से दिया गया तथा परंतु अभी तक कोई समाधान नहीं हुआ है।

प्रदर्शन में कामरेड रवि खन्ना, पूर्व विधायक शिवशंकर भारद्वाज, पूर्व महिला जिला प्रधान अमन तंवर राघव, व्यापारी नेता पवन बुवानीवाला, पिछड़े वर्ग नेता सुरेश प्रजापति, समीर खटीक, गणेशी लाल, युवा कल्याण संगठन के कमल प्रधान, शहर के गणमान्य नागरिक सुरेंद्र परमार, जीएम नरेश तंवर, संतोष देशवाल, अशोक ढोला, आसन सांगवान, व्यापारी नेता भीमसैन, महेश कालरा, अनिल कानोडिया, भरत मेहता, अनिल मुंजाल, रिटायर्ड कर्मचारी नेता रतन कुमार जिंदल, रमेश ढिकाव, यादविरेद्र शर्मा सहित सैंकड़ों लोग शामिल हुए।

हनुमान जोहड़ी मंदिर के विवेकानंद सभागार में नशा मुक्त जागरूकता संकल्प कार्यक्रम आयोजित

देश की तरक्की के लिए नशा जैसी सामाजिक बुराई को त्यागने की आवश्यकता : महंत चरणदास महाराज

हरियाणा वाटिका/मनोज मलिक

भिवानी, 09 जून। युवाओं को नशे की गर्त से बाहर निकालने के लिए युवा जागृति एवं एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट द्वारा नशा मुक्त हरियाणा अभियान चलाया हुआ है, जिसके तहत समय-समय पर ना केवल भिवानी, बल्कि अन्य शहरों में भी जागरूकता अभियान चलाया जाता है। इसी अभियान के तहत सोमवार को स्थानीय हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी मंदिर के स्वामी विवेकानंद सभागार में नशा मुक्त जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह जानकारी समाजसेवी रमेश सैनी ने देते हुए बताया कि कार्यक्रम में सान्निध्य हुआ, जिसमें मुख्यअतिथि के तौर पर सिटी एसएचओ सत्यनारायण, ट्रैफिक इंचार्ज सुरेश कुमार व जैन चौक चौकी इंचार्ज देवेंद्र ने शिरकत की तथा उपस्थित लोगों को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई।

इस मौके पर सिटी एसएचओ सत्यनारायण, ट्रैफिक इंचार्ज सुरेश कुमार, जैन चौक चौकी इंचार्ज देवेंद्र ने कहा कि नशा ना केवल व्यक्ति की सेहत को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि पूरे समाज को

प्रभावित करता है। उन्होंने उपस्थित नागरिकों, युवाओं, दुकानदारों व राहगीरों से अपील की कि वे स्वयं नशे से दूर रहें और दूसरों को भी इसके खिलाफ प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि अधिकत्तर अपराध की जड़ नशा ही होता है। नशे की गर्त में फंसकर युवा अपराध की दुनिया में अनजाने में ही शामिल हो जाते है, जिसका नकारात्मक प्रभाव ना केवल उनके, बल्कि उनके परिवार के साथ-साथ देश के भविष्य पर भी पड़ता है। ऐसे में समाज व देश की तरक्की के लिए जरूरी है कि प्रत्येक जन नशे से दूरी बनाए। इस दौरान उन्होंने महिलाओं से विशेष रूप से आह्वान किया कि वे अपने बच्चों की हरकतों पर विशेष ध्यान रखे तथा उन्हे गलत संगत में फंसने से बचाए।

इस मौके पर बालयोगी महंत चरणदास महाराज ने कहा कि देश व समाज की तरक्की के लिए नशा जैसे जहर व सामाजिक बुराई के खिलाफ सामाजिक आंदोलन की जरूरत है, जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है, तभी इस जहर से देश के भविष्य को बचा सते है। उन्होंने कहा कि खासकर युवाओं को इस अभियान से जुडक? नशा जैसी सामाजिक बुराई को त्यागने की आवश्यकता है, ताकि एक बेहतर कल का निर्माण किया जा सकें।

इस अवसर पर पर्यावण प्रहरी विजय सिंहमार, नरेंद्र राज गागड़वास, भाजपा नेता संजय शर्मा, समाजसेवी राजेश तलवार, ऋषि शर्मा, नरेश आहुजा, श्याम सुंदर सनातनी, हरीश शांडिल्य सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर होने वाली योग मैराथन बनाएंगी हरियाणा का नया रिकॉड : संजीव वर्मा

कुरुक्षेत्र में 15 जून को होगी राज्य स्तरीय योग मैराथन, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी करेंगे कार्यक्रम में शिरकत

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 09 जून। हरियाणा खेल विभाग एवं आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर कुरुक्षेत्र ब्रह्मसरोवर पर होने वाली योग मैराथन हरियाणा का नया रिकॉर्ड बनाएंगी। इस योग मैराथन का राज्य स्तरीय आयोजन 15 जून को कुरुक्षेत्र में होने जा रहा है। इस योग मैराथन में 25 हजार से ज्यादा लोग, योग युक्त, नशा मुक्त हरियाणा के लिए दौड़ लगाएंगे। इस मैराथन को ऐतिहासिक और यादगार बनाने के लिए अलग-अलग विभागों को जिम्मेवारी सौंप दी गई है। आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा सोमवार को लघु सचिवालय के सभागार में प्रशासनिक अधिकारियों, पार्षदों और कॉलेज प्राचार्या की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले महानिदेशक संजीव वर्मा ने पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा,उपायुक्त नेहा सिंह, पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल, पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के केन्द्रीय प्रभारी राकेश से योग मैराथन को ऐतिहासिक और यादगार बनाने के लिए विचार विमर्श साझा किया। उन्होंने कहा कि मैराथन में हिस्सा लेने के लिए गुगल फॉर्म तैयार किया जा रहा है। जो युवा इस कार्यक्रम में हिस्सा लेगा उसको सर्टिफिकेट भी जारी किया जाएगा।

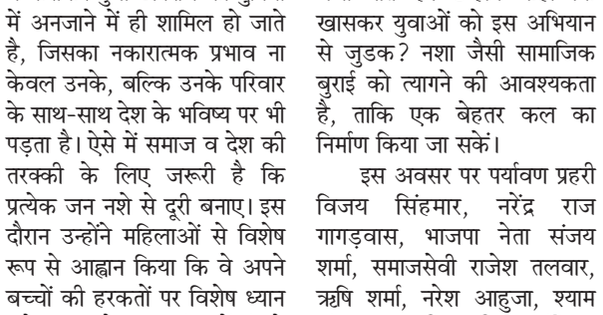

जिसके लिए उन्हें सेल्फी लेकर अपडेट करनी होगी। इसके अलावा जिला प्रशासन की तरफ से उपहार भी दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर 15 जून को कुरुक्षेत्र में योग मैराथन का आयोजन का आयोजन किया जाएगा। ये योग मैराथन अब तक हुई सभी मैराथनों का रिकॉर्ड तोड़कर नया रिकॉर्ड कायम करेगी। इस मैराथन में कुरुक्षेत्र व आसपास के जिलों से करीब 25 हजार युवा हिस्सा लेंगे, इनमें खिलाड़ी, विद्यार्थी, एनसीसी व एनएसएस कैडेट्स, युवाओं सहित हर वर्ग के व्यक्ति शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि योग मैराथन 21 जून के अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका अदा करेगी। आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा ने कहा कि योग मैराथन और योग दिवस को लेकर जिला प्रशासन द्वारा एक कंट्रोल रूम स्थापित किया जाए। ताकि सभी प्रकार की जानकारी एक जगह पर आसानी से दी जा सके। इसके अलावा सभी विभाग अपनी-अपनी रोजाना की रिपोर्ट बनाकर प्रस्तुत करें। इन जानकारियों को डाटाबेस तैयार करते हुए भविष्य के लिए भी रखें। उन्होंने खेल विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वो कुरुक्षेत्र में ही रहते हुए योग मैराथन की तैयारियों को किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस मैराथन को सफल बनाने के लिए अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए समाज में अच्छा संदेश दें। इस मौके पर पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा, मुख्यमंत्री कार्यालय के प्रभारी कैलाश सैनी, उपायुक्त नेहा सिंह, पुलिस अधीक्षक नीतीश अग्रवाल, एसडीएम थानेसर अमन कुमार, एसडीएम पंकज सेतिया, एसडीएम डा. चिनार चहल, एसडीएम कपिल कुमार, डीएमसी सतेंद्र सिवाच, जिला परिषद सीईओ शंभू सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

सिरसा की बेटी मेजर कर्मजीत कौर ने रचा इतिहास

सफलतापूर्वक की 6500 किलोमीटर की समुद्री यात्रा

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। जिला के गांव कंगनपुर की बेटी मेजर कर्मजीत कौर मुंबई से सेशेल्स तक 6500 किलोमीटर समुद्री मील की ऐतिहासिक समुद्री यात्रा भारतीय निर्मित समुद्री जहाज से सफलतापूर्वक पूरी करने के बाद टीम मुंबई लौट आई। मेजर कर्मजीत कौर के सिरसा पहुंचने पर पिता एडवोकेट रिछपाल सिंह रंधावा, माता राजविंद्र कौर व भाई एडवोकिट अर्शप्रीत सिंह के अलावा परिजनों व ग्रामीणों ने उनका स्वागत किया।

उल्लेखनीय है कि मेजर कर्मजीत कौर का 2015 में चयन फौज में हुआ था। वह अभी मुंबई में कार्यरत है। मेजर कर्मजीत ने बताया कि बीती 7 अप्रेल को मुंबई से इस अभियान को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया था। यह अभियान भारतीय सेना की समुद्री यात्रा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है, जो सेना, नौसेना और वायु सेना में महिला अधिकारियों की परिचालन शक्ति और तालमेल को प्रदर्शित करता है। इस टीम में भारतीय सेना की लेफ्टिनेंट कर्नल अनुजा, मेजर कर्मजीत कौर, मेजर तान्या, कैप्टन ओमिता, कैप्टन दौली, कैप्टन प्राजक्ता, भारतीय नौसेना की लॉफ्टिनेंट कमांडर प्रियंका और भारतीय वायु सेना की स्क्वाड्रन लीडर विभा, स्क्वाड्रन लीडर श्रद्धा, स्क्वाड्रन लीडर अरुवी, स्क्वाड्रन लीडर वैशाली शामिल थीं। स्वदेश निर्मित 56 फुट लंबे जहाज त्रिवेणी पर सवार सभी महिला चालक दल ने दो महीने तक खुले समुद्र की कठोर परिस्थितियों में उष्णकटिबंधीय तूफानों, समुद्र की उच्च स्थितियों और लंबे समय तक थकान से जूझते हुए यात्रा की। मेजर कर्मजीत कौर ने कहा कि यह मिशन भारत के रक्षा परिदृश्य में अग्रणी योगदानकताओं के रूप में महिलाओं की उभरती भूमिका को रेखांकित करेगा। अभी तक भारतीय समुद्रों का भ्रमण किया गया है, लेकिन अब टीम अन्य देशों के समुद्रों का भी इसी प्रकार से भ्रमण कर एक नया इतिहास रचने का काम करेगी।

श्री श्याम बगीची में हरि कथा का आयोजन

गुरु शरण धारण करना अति आवश्यक: भारती

हरियाणा वाटिका/रवि कुमार

सिरसा, 09 जून। दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान द्वारा श्री श्याम बगीची में आयोजित तीन दिवसीय कथा के दूसरे दिन साध्वी दिवेशा भारती ने संत नामदेव की जीवन गाथा को प्रस्तुत करते हुए बताया कि संत नामदेव भगवान विल के अनन्य भक्त हैं। बचपन से ही भगवान विल उनके समक्ष प्रकट होते रहे। बाल्य काल से ही भगवान के चरणों से उनकी अटूट प्रीति थी और भगवान की आराधना करते थे। भगवान को जब भी पुकारते भगवान अपनी मूर्ति में से प्रकट होकर के उनको दर्शन देते थे।उन्होंने बताया कि संत नामदेव का जीवन चरित्र साथ ही साथ हमें बहुत बड़ी सत्यता से जागरूक करवाता है। कहते है बड़े होने के बाद संत नामदेव को एक बाद भगवान प्रकट होकर उन्हें गोरा कुम्हार के घर में जाने के प्रेरणा देते हैं। वहां मौजूद संत उन्हें कच्चा घड़ा की संज्ञा देते हैं जिसे वे भगवान को बताते हैं। इसका अर्थ यह है कि गुरू का जीवन में होना अति आवश्यक है। सृष्टि के रचयिता भगवान

श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण को भी गुरू धारण करना पड़ा। साध्वी ने बताया कि यदि अभिभावक अपने बच्चों को कुछ देना चाहते हैं तो उन्हें बाल्यकाल से ही भारतीय संस्कृति से जोडनो होगा। जब बच्चे भारतीय संस्कृति के साथ बच्चे जुड़ेंगे तब उनको पता चलेगा कि किस प्रकार से वह अपने अस्तित्व को भगवान की नजरों में महान बना सकते हैं।

शिक्षक ट्रांसफर पॉलिसी में उत्कृष्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम के अंक शिक्षकों को भी मिलें: डॉ. कौशिक

हरियाणा वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 09 जून। हरियाणा स्कूल लेक्चरर्स एसोसिएशन कुरुक्षेत्र के जिला प्रधान डॉ. तरसेम कौशिक ने राज्य सरकार और शिक्षा विभाग से मांग की है कि शिक्षक संगठनों द्वारा दिए गए सुझावों को शामिल करते हुए ट्रांसफर ड्राइव शीघ्र शुरू की जाए और यह प्रक्रिया पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ संचालित की जाए। डॉ. तरसेम कौशिक ने कहा कि वर्ष 2016 से अब तक शिक्षक ट्रांसफर पॉलिसी में कई बार बदलाव किए गए लेकिन प्रत्येक बार ये बदलाव अव्यवहारिक और शिक्षकों के हितों के विरुद्ध साबित हुए। उन्होंने वर्ष 2022 की ट्रांसफर ड्राइव को उदाहरण देते हुए कहा कि अव्यवहारिक रेशनलाइजेशन और नॉर्मलाइजेशन के कारण अनेक विद्यालयों में शिक्षकों की अधिकता हो गई, जबकि कई विद्यालय अभी भी शिक्षकों की कमी से जूझ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त अनेक शिक्षक वर्षों से अपने गृह जिले से दूर रहकर कार्य कर रहे हैं जिससे उनके पारिवारिक जीवन और मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। डॉ. कौशिक ने स्पष्ट किया कि शिक्षा विभाग को इस बार शिक्षक संगठनों के सुझावों को गंभीरता से लेते हुए व्यवहारिक ट्रांसफर ड्राइव पॉलिसी लागू करनी चाहिए। उन्होंने खासतौर पर बोर्ड कक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम देने वाले शिक्षकों को 5 अंक दिए जाने की पुरानी व्यवस्था की पुनर्बहाली की जोरदार मांग की।

पर्यटन का खास मुकाम डल झील

डल झील श्रीनगर, कश्मीर में तो प्रसिद्ध है ही लेकिन दुनिया भर के सैलानियों के लिए भी यह पर्यटन का एक खास मुकाम है। कहा जाता है कि इसमें स्त्रोतों से जल आता है एवं यह झाल खुद ही कश्मीर घाटी में काफी झीलों से जुड़ी हुई है।

यह दुनिया भर में शिकारों या हाऊस बोट के लिए जानी जाती है और सैलानी खासतौर पर इनका आनंद लेने के लिए यहां आते हैं। यह 18 किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है। तीन दिशाओं से पहाड़ियों से घिरी डल झील जम्मू कश्मीर की दूसरी सबसे बड़ी झील मानी जाती है और भारत की सबसे सुंदर झीलों में इसे शामिल किया जाता है। पर्यटक जम्मू-कश्मीर आएं और डल झील देखने न जाएं ऐसा हो ही नहीं सकता।

डल झील के पास ही मुगलों के सुंदर एवं प्रसिद्ध पुष्प वाटिका से झील की आकृति और उभरकर सामने आती है। मुख्य रूप से इस झील में मछली का काम होता है। डल झील के मुख्य आकर्षण का केंद्र हैं यहां के हाउसबोट। सैलानी इन हाउसबोटों में रहकर इस खूबसूरत झील का आनंद उठा सकते हैं।

झील, कश्मीर की घाटियों की अन्य धाराओं के साथ मिल जाती है। झील के चार जलाशय हैं गगरीबल, लोकुट डल, बोड डल तथा नागिन। लोकट डल के मध्य में रूप लंक द्वीप स्थित है, तथा बोड डल जलधारा के मध्य में सोना लंक स्थित है। वनस्पति डल झील की खूबसूरती को और निखार देती है। कमल के फूल, पानी में बहती कुमुदनी, झील की सुंदरता को दुगुना कर देती है।

सैलानियों के लिए झील के सौंदर्य के अलावा भी विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधन यहां पर उपलब्ध हैं। जैसे कि कायाकिंग, केनोइंग डोंगी पानी पर सर्फिंग करना व ऐंगलिंग मछली पकड़ना आदि से सफर और ज्यादा रोमांचक हो जाता है। कश्मीर के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय झील के तट पर स्थित है। हाउसबोट में रहकर सैलानी इस झील के खूबसूरत वातावरण से भावविभोर हो जाते हैं।

शिकारे के माध्यम से सैलानी नेहरूपार्क, कानुटूर खाना, चारचिनारी, कुछ द्वीप जो यहां पर स्थित हैं, उन्हें देख सकते हैं। श्रद्धालुओं के लिए हजरतबल तीर्थस्थल के दर्शन करे बिना उनकी यात्रा अधूरी रह जाती है। शिकारे के माध्यम से श्रद्धालु इस तीर्थस्थल के दर्शन कर सकते हैं। एक शिकारे पर सवार होकर विभिन्न प्रकार की कश्मीरी चीजें भी खरीद सकते हैं और दुकानें भी शिकारे पर ही लगी होती हैं। यह माल खरीददार तक ही सीमित नहीं है, परन्तु एक रोमांचित कर देने वाला खेल भी होगा।

कैसे जाएं: यदि पर्यटक डल झील पहुंचना चाहते हैं, तो श्रीनगर जिले से 25 किलोमीटर की दूरी पर बडगाम जिले में स्थित एयरपोर्ट पर पहुंच सकते हैं। नजदीक रेल सेवा जम्मू में स्थित है, तथा वहां का नेशनल हाईवे एनएचए कश्मीर घाटी को देश के अन्य भागों से जाड़ता है। इन पहाड़ी इलाकों पर यात्रा करने के लिए दस से बारह घंटे लगते हैं। इस सफर के दौरान पर्यटक यहां के प्रसिद्ध जवाहर टनल को निहार सकते हैं।

धर्मशाला में उठायें बर्फली पहाड़ियों का रोमांच

धौलधार की पहाड़ियों में ट्रैकिंग व रॉक क्लाइबिंग जाने के लिए धर्मशाला शुरूआती पॉइंट है। यहां कई नदियों व झरनों में एंगलिंग व फिशिंग का मजा लिया जा सकता है। यहां का नजदीकी एयरपोर्ट गगला है, जिसकी यहां से दूरी 13 किलोमीटर है।

पहाड़ियों में चीड़ व देवधर के घने जंगलों और बर्फ को करीब से देखने का अनुभव धर्मशाला में मिलता है। यहां सीधे-सादे और बौध धर्म के बिरले चिन्ह भी यहां आसानी से देखने को मिलते हैं। धर्मशाला में झरने व सुहाने नजारे इस जगह को सभी की पसंद बनाते हैं। हालांकि अब यहां तिब्बत के लोग ज्यादा रहते हैं, लेकिन ब्रिटिश काल का प्रभाव इस छोटे शहर पर आज भी महसूस किया जा रहा है।

खूबसूरत पहाड़ी शहर धर्मशाला को यूं तो अंग्रेजों ने बसाया था, लेकिन अब तिब्बतियों की संख्या ज्यादा होने से इस पर वहां के कल्चर का इतना प्रभाव पड़ा है कि इसे लिटल ल्हासा के नाम से जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश में धौलाधर की पहाड़ियों में बसा धर्मशाला देश-विदेश के सैलानियों का पसंदीदा हिल स्टेशन है। इसे साल 1855 में अंग्रेज ने इसे बसाया था। दरअसल, यह उन 80 रिजॉर्ट्स में से था, जिन्हें अंग्रेजों ने गर्मी से बचने के लिए तैयार करवाया था।

गद्दी, तिब्बती, टेकर्स, टूरिस्ट और लोकल वेंडर्स, सब मिलकर निचले धर्मशाला यानी कोतवाली बाजार में एक अलग ही माहौल बनाते हैं। यह जगह समुद्र तल से 1250 मीटर की ऊंचाई पर है। लोगों का खूब आना-जाना होने की वजह से यहां खासी हलचल रहती है। समुद्र तल से 1768 मीटर की ऊंचाई पर बसे ऊपरी धर्मशाला यानी मैकलॉडगंज में दलाई लामा का निवास है। दोनों जगह की दूरी 10 किलोमीटर है। जहां तक घूमने की बात है, तो धर्मशाला में आपको अडवेंचरस व स्प्रिचुअल माहौल मिलेगा। ठंडी पहाड़ी हवाओं में गूंजती प्रार्थनाओं की आवाजें मन को एक ठहराव देती हैं। ऐसे में बेशक धर्मशाला जाना दलाई लामा से मुलाकात के बिना अधूरा है और यकीन मानिए इस माहौल में उनका साथ किसी भी इंसान को कुछ देर के लिए एक अलग ही दुनिया में ले जाता है। वैसे,धर्मशाला की तमाम मोनेस्ट्रीज एक बार देखने लायक जरूर हैं और अलग-अलग समाधियों में भगवान बुद्ध की तांबे की प्रतिमाएं भी दर्शनीय हैं। अब जब इतना कुछ एक ही जगह पर मौजूद है तो देश-विदेश के पर्यटकों का सहज ही धर्मशाला की ओर खिंचे आना हैरानी की बात नहीं है। अगर आप मेडिटेशन करते हैं तो यहां के तुशिता मेडिटेशन सेंटर में मोक्ष द्वारा दी जाने वाली क्लासेज जॉइन की जा सकती है। यहां आपको साफ-सुथरे आवास की सुविधा भी मिलेगी। मेडिटेशन सीखने के बाद नेचुंग मोनेस्ट्री में 3किलोमीटर बना म्यूजियम देख सकते हैं। नोबरलिंगा इंस्टीट्यूट में आप नए आर्टिस्ट्स को थंगका पेंटिंग्स सीखते देख सकते हैं। अगर आप दाल, चावल, रोटी और सैंडविच खाकर बोर हो गए हैं तो यहां आप बेहतरीन तिब्बती खाने का मजा ले सकते हैं।

यहां के कई रेस्तरांओं में आपको लजीज मोमोज व थुक्पा खाने को मिलेंगे। खाने का लुत्फ लेने के बाद आप लंबी वॉक, ट्रेकिंग और खूबसूरत नजारों में पिकनिक का मजा ले सकते हैं। यहां से 8 किलोमीटर आगे आपको ब्रिटिश राज का मेमोरियल चर्च ऑफ सेंट जॉन-इन-द विल्डरनेस देख सकते हैं। इसे ब्रिटिश वायसरॉय लॉर्ड एलगिन के नाम पर बनाया गया है। निचले धर्मशाला में बना कांगड़ा आर्ट म्यूजियम कांगड़ा के सालों पुराने इतिहास को दिखाता है।

म्यूजियम की एक गैलरी में आपको कांगड़ा की मशहूर पेंटिंग्स, स्कल्पचर्स, मिट्टी के बर्तन और एंथ्रोपॉलजी से जुड़ी तमाम चीजें देखने को मिलेंगी। धर्मशाला के एंट्री पॉइंट पर आपको एक वॉर मेमोरियल देखने को मिलेगा, जिसे स्वतंत्रता की लड़ाई में शहीद होने वाले जवानों की याद में बनवाया गया है। धर्मशाला में धर्मकोट व डल लेक जैसे पिकनिक स्पॉट्स भी हैं और यहां सितंबर के महीने में हर साल एक बड़ा मेला भी लगता है।

इसी के पास भगसुनाथ की श्राइन भी है। इस पुराने मंदिर के पास से बहते ताजे पानी से झरने इस जगह को एक अलौकिक नजारा बना देते हैं। देवी कुणान पथरी को समर्पित मंदिर, ततवानी के गर्म पानी के झरने और मछरैल के बड़े वॉटरफॉल भी देखने लायक जगहें हैं। अगर वुड वर्क में दिलचस्पी रखते हैं तो नॉरबुलिंका इंस्टीट्यूट जरूर जाएं। यहां हो रहे काम की आर्ट को देखकर निश्चित तौर पर आप हैरान रह जाएंगे। स्वामी चिन्मानंद द्वारा बनाया गया चिन्मय तपोवन भी एक दर्शनीय जगह है। बिंदु सारस के किनारे बसे इस आश्रम में आपको नौ मीटर ऊंची हनुमान जी की मूर्ति, राम मंदिर, मेडिटेशन हॉल वगैरह दिखेंगे।

धौलधार की पहाड़ियों में ट्रैकिंग व रॉक क्लाइबिंग जाने के लिए धर्मशाला शुरूआती पॉइंट है। यहां कई नदियों व झरनों में एंगलिंग व फिशिंग का मजा लिया जा सकता है। यहां का नजदीकी एयरपोर्ट गगला है, जिसकी यहां से दूरी 13 किलोमीटर है। यहां से नजदीकी रेलवे स्टेशन पठानकोट है, जहां से धर्मशाला 85 किलोमीटर की दूरी पर है। सड़क मार्ग से यहां चंडीगढ़, कीरतपुर और बिलासपुर होते हुए पहुंचा जा सकता है। तिब्बती नए साल यानी मार्च के आस-पास यहां बहुत टूरिस्ट आते हैं। वैसे, मई से अक्टूबर के बीच ट्रैकिंग सीजन रहता है। धर्मशाला में हैंडीक्राफ्ट मसलन तिब्बती कार्पेट, टेक्स्टाइल, ट्रडिशनल, हैट्स, बैग्स, ट्राउजर्स, मेटलवर्क, जूलरी, जैकेट व हाथ से बने कार्डिगन आदि के शौकीनों के लिए ढेर सारी जगहें हैं।

सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक नेहा वालिया द्वारा साई प्रिंटिंग प्रैस, बी-868, न्यू अशोक नगर, दिल्ली-110096 से मुद्रित एवं वालिया सदन वार्ड संख्या 10, लोहारू, भिवानी (हरियाणा) 127201 से प्रकाशित। समाचार पत्र में प्रकाशित सभी समाचारों के लिए पीआरबी एट के तहत उत्तरदायी। फोन:01252-259260, 9255149495, ईमेल: haryanavatika@gmail.com हरियाणा वाटिका:- प्रेरणास्त्रोत- स्व. डॉ. एल सी वालिया, समूह संपादक एवं संरक्षक- श्रीमति सरला वालिया, संपादक- श्रीमति नेहा वालिया, कार्यकारी संपादक- श्रीमति रितू वालिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लोहारू (भिवानी) होगा।